© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सत्संग की सरिता

मुनि कमलकुमार

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

i zd K' kd %जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं – 341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 222080 / 224679
ई–मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© **जैन विश्व भारती, लाडनूं**

आर्थिक सौजन्य :
स्वर्गीय जगमोहन जैन तथा विमल जैन की पुण्य स्मृति में
श्रीमती नान्हीं देवी जैन (धर्मपत्नी जगमोहन जैन) तथा
श्रीमती मूर्त्तिदेवी जैन (धर्मपत्नी विमल जैन) केसिंगा (ओड़िशा)

प्रथम संस्करण : मार्च २०१०

मूल्य : ६०/- (साठ रुपया मात्र)

मुद्रक : कला भारती, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली-११००३२

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशीर्वचन

साहित्य की एक विधा हैह्वगीत। उसमें भावों की वेधकता शब्दों की सुन्दर संयोजना और लय की सरसता के साथ गायक की कंठ मधुरता का योग हो जाता है तो गीत श्रोताओं को मंत्रमुग्ध बनाने वाला हो सकता है।

मुनिश्री कमलकुमारजी व्याख्यानरसिक संत हैं, गाते भी हैं, गीत बनाते भी हैं। उनकी सृजनधार्मिता में और अधिक निखार आए और उनके गीत जनता के आकर्षण के केन्द्र बने। मंगलकामना।

८ जनवरी २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**
बीदासर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति

दीक्षा लेते ही प्रथम चातुर्मास हरियाणा के प्रमुख उद्योगपति ओमप्रकाशजी जिन्दल के जिन्दल क्लब में शासनश्री गणेशमलजी स्वामी के सहयोगी रूप में किया। हरियाणा के लोग भजनों के प्रेमी होते हैं। उन्हें नियमित नए नए गीत सुनाने का अवसर मिला। उस समय से गीत बनाने की भावना जगी, कुछ गीत बनाये। मुनिश्री गणेशमलजी स्वामी, कन्हैयालालजी स्वामी उनका परिष्कार कर देते। समय-समय पर गीत बनाने का क्रम चलता रहा। काफी गीत बताये। उसमें से चयनित गीतों का संग्रह साहित्य समिति को दिखाया। उन्होंने कुछ गीतों को प्रकाशन के योग्य मान कर मेरा उत्साह बढ़ाया। इसके लिए मैं साहित्य समिति के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूं।

परम श्रद्धेय युवामनीषी महातपस्वी युवाचार्यप्रवर ने अपना पावन संदेश प्रदान कर इस कृति का महत्त्व बढ़ाया है, इसके लिए मैं हृदय से नतमतस्तक हूं।

पूज्यवरों ने यात्रा का अवसर प्रदान किया। पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, नेपाल, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीस, मध्यप्रदेश आदि-आदि क्षेत्रों में प्रवचन का काफी काम पड़ता और साथ-साथ संगीत भी गाता।

आदरणीया सहोदरी साध्वीश्री सोमलताजी एक अच्छी वक्ता और गायिका साध्वी है। उनकी गीतों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने जब गीतों को देखा तो बहुत प्रसन्न हुई और इन्हें व्यवस्थित करने की प्रेरणा दी। उनकी प्रेरणा भी इस पुस्तक की निष्पत्ति में निमित्त बनी है।

मुनि कमलकुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

१. तीर्थंकर हैं बहुत महान.....	१
२. जय ऋषभनाथ भगवान.....	२
३. मरुदेवा रो जायो.....	३
४. ओम् पार्श्व प्रभु का ध्यान धरो	४
५. जय-जय महावीर भगवान	५
६. महावीर की गाथा गाएंगे	६
७. आई वीर जयन्ती आज....	७
८. जन्म जयन्ति के अवसर पर	८
९. हे विश्व के प्राणाधार.....	९
१०. ओम् भिक्षु स्वाम.....	१०
११. भिक्षु स्वामी रा गुण गास्यां	११
१२. रोम-रोम में बस रहे भिक्षु ज्यों फूलों में वास	१३
१३. जन-जन में खुशियां अपार.....	१४
१४. भिक्षु-भिक्षु जप अभिधान.....	१५
१५. भिक्षु नाम है सबका सहारा	१६
१६. जय ज्योतिर्मय जगदीश	१७
१७. हमें दो सन्मति का वरदान रे.....	१८
१८. भिक्षु चरणां में मिलजुल कर.....	१९
१९. श्री जयाचार्य की गौरव गाथा गाएंगे	२०
२०. मघवा गुरुवर रा गुणगान.....	२१

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२१. माणकगणी री स्वर्गारोहण	२२
२२. डालगणी रो उपकार किंयां भूल जावां	२३
२३. गावो-गावो-गावो-गावो गुरु रा गुण गावो हो	२४
२४. कालूगणी रो उपकार.....	२६
२५. ओम जय-जय-जय गण ताज	२७
२६. ओम् जय अन्तर्यामी	२८
२७. तुलसी गुरुवर चरणों में	२९
२८. तेरापंथ रा हा ताज.....	३०
२९. ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर....	३२
३०. ई शासनपति री महिमा च्यारूं कूंटां छाई है	३३
३१. वदना मां री कूख उजाली.....	३४
३२. ओम् तुलसी तुलसी सब सुमरो	३६
३३. तुलसी राम भजो तुलसीराम भजो	३७
३४. गुण गायें गुण, तू है निपुण	३८
३५. मेरा चंचल मन विषयों में....	३९
३६. सुगुरु रा गुण मैं गाऊं गाऊं गाऊं रे	४०
३७. आज सुगुरु के दर्शन पाकर	४१
३८. चिर यौवन को पुण्य प्रणाम	४२
३९. संचित कर्म खपायें	४३
४०. गुरुदेव मुझे पल-पल तेरी याद सताती है	४४
४१. म्हाने गुरुवर रो शरणो है....	४५
४२. महाप्रज्ञ की गौरव गाथा गायेंगे...	४६
४३. जिनके स्मरण मात्र से मिटता	४७
४४. जय महाप्रज्ञ गुरुवर	४८
४५. ॐ जय-जय महाश्रमण	४९

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४६. जय महाश्रमण युवराज ५०
४७. आज म्हे सब मंत्री मुनि री... ५१
४८. मुनि गणेश री समता विशेष याद आसी ५३
४९. मुनि गणेश-३ गा.... ५४
५०. पर्युषण पर्व मनाओ..... ५५
५१. आई संवत्सरी-२ सारा..... ५६
५२. संवत्सरी है पर्व महान्..... ५७
५३. आज संवत्सरी आई ५८
५४. सब स्यूं खमावां.... ५९
५५. सबसे खमायें, आनन्द पायें..... ६०
५६. संवत्सरी पर्व मनाओ..... ६१
५७. जन्माष्टमी की बेला आई जन-२.... ६२
५८. आया यह पावन त्योंहार ६३
५९. आई दिवाली-३ ६५
६०. रक्षा बन्धन का त्योंहार भाई ६७
६१. आई होली रे-२ सद्गुण..... ६८
६२. धर्म सहना सिखाता है ६९
६३. जैन धर्म की जय हो ७०
६४. करना चाहता हूं मैं भगवान..... ७२
६५. मत भूलो कर्त्तव्य कभी..... ७३
६६. अच्छे बच्चे लगते प्यारे..... ७४
६७. एक बूंद का विस्तार यह संसार मान ले ७५
६८. बीड़ी, सिगरेट, हुक्के वालों.... ७६
६९. चुटकी, रजनीगंधा छोड़ो..... ७७
७०. अपनी रखना मधुर जबान ७८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७१. पहले तोलो दिल टंटोलो ७९
७२. करें समाई करें समाई करें समाई जी ८०
७३. स्वाध्याय दिवस यह आया है ८१
७४. अपने मन को तोलो-२ ८२
७५. जप की महिमा भारी ८३
७६. खाद्य संयम जरूरी है ८४
७७. अणुव्रत है सच्चा धन ८५
७८. अणुव्रत जीवन का श्रृंगार ८६
७९. प्रतिदिन करें समाई ८७
८०. रे मानव! धन, यौवन..... ८८
८१. किन्हों थोकड़ो (अठाई-पखवाड़ो)..... ८९
८२. पर-गुण गाने बन वाचाल ९०
८३. अनशन का है अनुपम काम.... ९१
८४. थांरी हिम्मत अनपार.... ९२
८५. अनशन की महिमा है भारी..... ९३
८६. थांरी हिम्मत देख अपार..... ९४
८७. करूं मैं अनशन के गुणगान रे..... ९५
८८. थे तो संथारो ठाकर (के) देखो..... ९६
८९. यह तन रोगों की खान..... ९७
९०. जो भी मिला खजाना..... ९८
९१. संथारे रा गुणगान मतिमान करै ९९
९२. भूल चूक करके मत करना किंचित कभी बुराई १००
९३. इस दुनिया में आकर के जिसने ममता त्यागी १०१
९४. विनय है सब धर्मों का सार १०२
९५. हैं हम नन्हें मुन्हें बच्चे कुछ करके दिखलाएंगे १०३

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९६. संघ की शान बढ़ायें हम १०४
९७. क्यों न देखता भूल स्वयं की यदि करना उत्थान रे १०५
९८. घर-घर बढ़े परस्पर प्यार १०६
९९. मेरा जन्म मरण मिट जाये..... १०७
१००. क्षमा सत्य संतोष दयादिक हैं ये सुख के मूल १०८
१०१. धर्म की शरण में आना होगा.... १०९
१०२. करले वास निवास मकान बेगाना है ११०
१०३. मुरली के गुण सुन लो भाई १११
१०४. गुरु दृष्टि पर प्रतिपल निर्भय होकर कदम बढ़ाना ११२
१०५. जो अपनी भूल बताये, औरों के गुण गाये रे ११३
१०६. असली आनन्द उसी ने पाया है ११४
१०७. अपने दूषण शीघ्र निकाल ११५
१०८. आज नशे के युग में नशा सिखाता हूं ११६
१०९. सचमुच गुरु बिन घोर अंधार ११७
११०. थोड़ा अपनी ओर निहारो खुद ही अपना रूप संवारो ११८
१११. नित अर्हम्-अर्हम् गाऊं मैं ११९
११२. करले-२ संगती संतां री नित भाई रे १२०
११३. युग पुरुष वही कहलाता है १२१
११४. मंगल गांवां हर्ष मनांवां झुक १२२
११५. शक्ति मिलने में, है यह पक्की बात १२३
११६. जो विषयों से मन हरले..... १२४
११७. नवकार मंत्र का ध्यान धरो १२५
११८. स्वागत की बेला में गुरुवर हम शत-शत..... १२६
११९. मानवता से ही होती है मानव की पहचान रे १२७
१२०. सन्मार्ग पर जो सदा चले, सत्पुरुष उसी को कहते हैं १२८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२१. देव मुझे दो ऐसी सन्मति जिससे भव तर जाऊं १२९
१२२. मानव खुद को शीघ्र सुधार १३०
१२३. लक्ष्य बनाएं शक्ति जगाएं पल-पल सफल बनायें १३१
१२४. ओम सत्संग की सरिता में नहाया करो १३२
१२५. मेरा जन्म मरण मिट जाये, ऐसा कोई पंथ मिले १३३
१२६. समझ ले अनेकांत सिद्धान्त १३४
१२७. हृदय का परिवर्तन है धर्म १३५
१२८. सत्संग प्रेमी सुनो सदस्यों कहना मेरा ध्यान से १३६
१२९. दो घड़ी तूं नाम प्रभू का लिये जा १३७
१३०. सुख शांति के प्यासे सत्संग किया करो १३८
१३१. सभी के जीवन में है द्वन्द १३९
१३२. निगुरे मत रहना इन्सान १४०
१३३. गुण ग्राहक बन जाओ १४१
१३४. जा रहा पल-पल में तेरा यह अरे जीवन १४२
१३५. जय-जय गुरु प्यारे, आये हम तेरे द्वारे १४३
१३६. बनामत सन्तों को मेहमान १४४

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

i zdk'kd % जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं – 341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 222080 / 224679
ई–मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१

तीर्थंकर हैं बहुत महान उनका ध्याऊं प्रतिदिन ध्यान।
ऋषभ, अजित, संभव हैं नाथ, अभिनन्दन, सुमति दें साथ॥
पद्म, सुपार्श्व करें कल्याण॥१॥

चन्द्र, सुविधि, शीतल हैं देव, पाऊं परम शान्ति गुरुदेव।
श्रेयांस, वासुपूज्य दो वरदान॥२॥

विमल, अनन्त, धर्म दाता, शान्ति, कुन्थु, अर हैं त्राता।
मल्ली मुनि सुव्रत भगवान॥३॥

नमि, नेमी, पारस, महावीर निर्मल धीर वीर गंभीर।
रखना कमल मुनि की शान॥४॥

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२

जय ऋषभनाथ भगवान भक्ति भाव श्रद्धायुत।
करते हैं गुणगान।।ध्रुव।।

नाभिराज पिता थे, मरूदेवा माता।
तृतियारे में जन्मे, घट-घट के ज्ञाता॥१॥

असि, मसि, कृषि का तुमने सबको बोध दिया।
तजकर जग की ममता, फिर सन्यास लिया॥२॥

बंधी बैल मुख छींकी, बारह घंटे तक।
अन्तराय फिर देखो, महिनों-महिनों तक॥३॥

चार हजार प्रभु के, साथ बने चेले।
भूख प्यास के कारण, बन गये अलबेले॥४॥

तेरह मास दिवस दस, मिली नहीं भिक्षा।
मौनी प्रभु ने पहले, दी न उन्हें शिक्षा॥५॥

अश्व, रतन, गज आदिक, प्रभु को बहराते।
क्या करते प्रभु उनका, आखिर मुड़ जाते॥६॥

सोम-पुत्र श्रेयांस को, है सपना आया।
सौ औ आठ इक्षु घट, बहरा सुख पाया॥७॥

अहो दानं अहो दानं (की) ध्वनी हुई भारी।
तप आगे नत मस्तक, सुर नर संसारी॥८॥

प्रभु की महिमा घर-घर गाते नर नारी।
संत कमल भगवान् की, जायें बलिहारी॥९॥

तर्ज : आरती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३

मरुदेवा रो जायो, धरा रोशन करग्यो।
अजरामर पद पायो, धरा पावन करग्यो।
धरा गुलशन करग्यो।।ध्रुव।।

बारह महिनां घोर तपस्या करके केवल पायो।
मीठो-मीठो मधुरो-मधुरो, फिर उपदेश सुणायो।
जग ने भी चमकायो, धरा रोशन करग्यो॥१॥

अक्षय तृतीया के दिन वर्षीतप रो पारणो पायो।
पड़पोते ने मेरू सिंचन रो है सपनो आयो।
इक्षु रस बहरायो, धरा रोशन करग्यो॥२॥

देव दुन्दुभि हुई गगन में, प्रभु पारणो पायो।
अहो दानं अहो दानं ध्वनि स्यूं गगन धरा गुंजायो।
सबरो दिल हर्षायो, धरा रोशन करग्यो॥३॥

असि मसि कृषि रो बोध दियो हो आदीश्वर भगवान।
आदिम भूपति, आदिम मुनि हा आदिम पुरुष महान।
तीर्थंकर कहलायो, धरा रोशन करग्यो॥४॥

प्रभु री पावन पुण्याई है, सचमुच अपरम्पार।
संत 'कमल' चरणां नत मस्तक विनवै बारम्बार।
मैं तरण शरण आयो, धरा रोशन करग्यो॥५॥

तर्ज : नखरालो देवरियो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

ओम् पार्श्व प्रभु का ध्यान धरो।
सब समता रस का पान करो।।ध्रुव।। ओम् पार्श्व.....

संसार का झूठा है नाता, कोई भी साथ नहीं जाता।
सब अपने में संतोष करो॥१॥ ओम् पार्श्व.....

जो आया निश्चित ही जाता, कोई भी यहां न टिक पाता।
सब धर्म ध्यान कर विजय वरो॥२॥ ओम् पार्श्व.....

अरिहंतों का ले लो शरणा, भव सागर से है यदि तरना।
सत्संगति करके विजय वरो॥३॥ ओम् पार्श्व.....

नितदिन रखना मन को चंगा, घर बैठे आएगी गंगा।
अंदर के मल को दूर करो॥४॥ ओम् पार्श्व.....

ये राग-द्वेष मोटे बेरी, पग-पग लेते इज्जत तेरी।
इस राग-द्वेष को दूर करो॥५॥ ओम् पार्श्व.....

ये जितने रिश्ते नाते हैं, बस मरघट तक ही जाते हैं।
आगे कर्मों का साथ करो॥६॥ ओम् पार्श्व.....

जब काल देवता आते हैं, सब धन परिजन रह जाते हैं।
झट अपनेपन का ज्ञान करो॥७॥ ओम् पार्श्व.....

मुनि 'कमल' सदा यों गाता है, तूं ही तेरा भाग्य विधाता है।
गुरुवाणी पर विश्वास करो॥८॥ ओम् पार्श्व.....

तर्ज : ओम् शान्ति जिनेश्वर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५

जय-जय महावीर भगवान, सबको सन्मति करो प्रदान।
सबको सन्मति करो प्रदान, सबको सन्मति करो प्रदान।
जय-जय महावीर भगवान।।

माता त्रिशला के नन्दन, काटो भव-भव के बंधन।
करुणा कर दो दयानिधान, जय-जय महावीर.....॥१॥

सुर संगम ने कष्ट दिये, साम्य भाव से सहन किये।
हम को भी दो ऐसा ज्ञान, जय-जय महावीर.....॥२॥

अर्जुनमाली को तारा, जो था भीषण हत्यारा।
कर दो हम सबका कल्याण, जय-जय महावीर.....॥३॥

शरणागत जो भी आया, उसको सत्पथ दिखलाया।
गौतम आदिक बने महान, जय-जय महावीर.....॥४॥

कमल गुणी के गुण गाये, भवसागर से तर जाए।
दे दो अब ऐसा वरदान, जय-जय महावीर.....॥५॥

तर्ज : रघुपति राघव.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६

महावीर की गाथा गाएंगे।
तन्मय बनकर पल-पल ध्यान लगाएंगे।
है उपकार अनंत नहीं बिसरायेंगे।।ध्रुव।।

जब तुम धरती पर आए, तो नई रोशनी लाए।
थे कुरूढ़ियों के बादल, चहुं दिशि में पूरे छाये॥
भुला न पाएंगे॥१॥

सुनकर के प्रभु का प्रवचन, श्रोता गण बदले तत्क्षण।
नास्तिक नर बनकर आस्तिक, कर देते सहज समर्पण॥
मौज मनाएंगे॥२॥

प्रभु वाणी थी कल्याणी, सुन श्रद्धा से भवि प्राणी।
पहुंचे हैं मोक्ष नगर में, बन अज्ञानी नर ज्ञानी॥
सदा सुनाएंगे॥३॥

तर्ज : करले वास निवास.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७

आई वीर जयन्ती आज, प्रभु के गुण गायें।
छाई खुशियां बे अन्दाज, प्रभु के गुण गायें।
है पुलकित सकल समाज, प्रभु के गुण गायें।।ध्रुव।।

भीषण कष्टों की आंधी में, कभी न हिलने पाया।
वर्धमान से ज्ञातपुत्र, महावीर स्वयं कहलाया।
चरणों में झुक जायें.....॥१॥

त्रिशला नन्दन महावीर की सुनकर करुण कहानी।
बहने लगता है आंखों से ज्यों दरिये का पानी।
बलिहारी हम जायें.....॥२॥

ऐसी शक्ति बक्सो हमको, आत्मस्थित बन जायें।
घूम-घूम कर दशों दिशाएं, तेरे सद्गुण गायें।
अवगुण सब दफनायें.....॥३॥

धन्य हुआ जीवन प्रभुवर का, धन्य हुए हम सारे।
करुणासागर की शिक्षाएं, जीवन में हम धारें।
ऐसी शक्ति पायें.....॥४॥

तेरे पदचिह्नों पर चलकर जीवन सफल बनायें।
ऐसा ही हिलमिल कर सारे, आज ही लक्ष्य बनायें।
जीवन को सरसायें.....॥५॥

तर्ज : नखरालो देवरियो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८

जन्म जयन्ति के अवसर पर, करते हार्दिक वंदन।
जय हे जय त्रिशला नन्दन।।ध्रुव।।

हिंसासक्त जगत को, प्रभु ने मैत्री पाठ पढ़ाया।
देकर सद्उपदेश जगत को, तुमने शीघ्र उठाया।
लो संभाल जगत की अब फिर, कटें सभी के बंधन॥१॥
जय हे जय.....

रूढ़िवाद औ दास प्रथा को, सचमुच दूर भगाया।
जन मानस को जागृत करके, नव आलोक दिखाया।
दुखियारी जनता का प्रतिपल, दूर किया आक्रन्दन॥२॥
जय हे जय.....

जातिवाद के घेरे से, जन-जन को शीघ्र निकाला।
गिरते हुए जगत को सत्वर, दे उपदेश संभाला।
तेरे पदचिह्नों पर चलकर बने स्वर्ण झट कुन्दन॥३॥
जय हे जय.....

मानव मन की दिव्य चेतना प्रभु की परम पुजारी।
जन्म जयंती के अवसर पर, जाएं मिल बलिहारी।
तेरी श्रद्धा भक्ति का रग-रग में सबके स्पन्दन॥४॥
जय हे जय.....

तर्ज : जहां डाल-डाल पर सोने की....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१

हे विश्व के प्राणाधार, तेरी हो जय-जयकार।।

त्रिशला का प्यारा, नयनों का तारा, भूतल का शृंगार।
हे विश्व के प्राणाधार॥१॥

तू है त्राता, घट-घट ज्ञाता, नैया कर दो पार।
हे विश्व के प्राणाधार॥२॥

तू परमेश्वर, तू करुणेश्वर, मुझको तेरा आधार।
हे विश्व के प्राणाधार॥३॥

तू है शुभंकर, तू तीर्थंकर, स्वप्न करो साकार।
हे विश्व के प्राणाधार॥४॥

जग का सितारा, प्राणों से प्यारा, कहता 'कमल' कुमार।
हे विश्व के प्राणाधार॥५॥

तर्ज : नील गगन.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०

ओम् भिक्षु स्वाम, ओम् भिक्षु स्वाम।
भिक्षु नाम बड़ा गुणकारी, जपा करो नित सुबह शाम।
ओम् भिक्षु स्वाम, ओ भिक्षु स्वाम।
भिक्षु नाम की गौरव गाथा, फैली घर-घर गाम गाम।
ओम् भिक्षु स्वाम, ओम् भिक्षु स्वाम।।ध्रुव।।

दीपां नन्दन शत-शत वंदन।
सविनय स्वीकारो अभिनन्दन।
आनंदित औ पुलकित मन से कोटी-कोटी करता प्रणाम॥१॥

भिक्षु नाम है शक्ति प्रदायक।
भिक्षु नाम है शिव सुखदायक।
सरल हृदय से भक्ति भाव से तन्मय हो जप भिक्षु नाम॥२॥

भिक्षु नाम बड़ा जयकारी।
भिक्षु नाम की महिमा भारी।
मिट जायेगी भिक्षु नाम से तन मन की दुविधा तमाम॥३॥

भिक्षु गुरु की सुन बलिदानी।
मन हो जाता पानी-पानी।
गुरु के पदचिह्नों पर चलकर, प्राप्त करूंगा मुक्तिधाम॥४॥

भिक्षु तुम मन में बस जाओ।
ईड़ा-पीड़ा सकल मिटाओ।
आया हूं मैं चरण 'कमल' में चाहता हूं भव से विराम॥५॥

तर्ज : मन सुमर-सुमर नित भिक्षु स्वाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११

भिक्षु स्वामी रा गुण गास्यां।
चरणां झुक-झुक शीश नमास्यां।
म्हानै बाबे रा सिद्धान्त प्यारा-प्यारा लागे।
आंने अपनाया ही जन्म-जन्म रा रोग भागे।
म्हांने बाबे रा सिद्धान्त प्यारा-प्यारा लागे।।ध्रुव।।

नहीं मारणो किसी जीव ने ओ है मोटो धर्म रे।
समझायो भरमायोड़ा लोगा नैं साचो मर्म रे।
राग-द्वेष वश ही आत्मा रे, चिपके सटके कर्म रे।
साचो पंथ दिखाकर बाबो, दूर कर्‌या सब भर्म रे।
बाबे री बलिहारी जावां।
म्हें सब म्हारा भाग्य सरावां।
श्रद्धा स्यूं बाबे ने सिंवर्‌यां, घट में पौरुष जागे।
म्हाने बाबे रा.....॥१॥

स्थान नहीं हो रेवण खातिर, कठे खाण रोटी पाणी।
पर बाबे रे जीवन में उतर्‌योड़ी, महावीर वाणी।
बिन मतलब ही लोग परस्पर, करता हा खींचा ताणी।
पर बाबे रे चरणां आकर के हो ज्याता पानी-पानी।
दे दे उदाहरण समझाता।
भूल्यां ने झट मारग ल्याता।
रात्यूं रात-रात भर खपता, शरणागत रे सागे।
म्हाने बाबे रा.....॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चरमोत्सव पर बाबे री, कुर्बानी ने म्हे याद करां।
सजग रह्वां मर्यादावां में, पल-पल पग-पग विजय वरां।
वीतराग पर श्रद्धा रखकर, भवसागर म्हे शीघ्र तरां।
सोतां उठतां प्रतिदिन, भिक्षु-भिक्षु सगला म्हे सुमरां।
लाग्या राजाणे में रंग।
सगला रे मन बड़ो उमंग।
'कमल' स्वामीजी ने सिंवर्यां, संकट दूर भागे।
म्हाने बाबे रा.....॥३॥

तर्ज : सिरियारी रो संत.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२

रोम-रोम में बस रहे भिक्षु ज्यों फूलों में वास।
चरणों के चाकर की, सुन लो प्रभु अरदास।।ध्रुव।।

दीपां नंदन शत-शत वंदन स्वीकारो।
भवसागर से नैया मेरी अब तारो।
बिना सुगुरु के कौन बुझाये अन्तर मन की प्यास॥१॥

हालत देख जगत की मन घबराया है।
घर-घर घट-घट में देखो तम छाया है।
कर दो अब तो सघन अंधेरे घट में दिव्य प्रकाश॥२॥

नव घाटी को पार किया नर जन्म मिला।
तेरे शासन को पाकर के भाग्य खिला।
रोमांचित हो जाता हूं मैं पढ़ तेरा इतिहास॥३॥

जब तक घट में प्राण तेरा विश्वास रहे।
श्रद्धा भक्ति बढ़े पल-पल उल्लास रहे।
कर दो कृपा कमल मुनि पर अब हो नित नव्य विकास॥४॥

तर्ज : बार-बार तुझे क्या बतलाऊं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३

जन-जन में खुशियां अपार, भिक्षु चरमोत्सव आयो।
रूं रूं में हर्ष अपार, भिक्षु चरमोत्सव आयो।।ध्रुव।।
जन-जन में.....

भिक्षु नाम मंत्राक्षर ले के अजमायलो।
भिक्षु नाम पर साची श्रद्धा जमायलो।
होसी सब स्वप्न साकार॥१॥ भिक्षु चरमोत्सव....

स्वाम नाम लेण वाला तर्‌या और तरसी।
आस्था राखण वालां रा काम सब सरसी।
बाबे रो नाम चमत्कार॥२॥ भिक्षु चरमोत्सव....

सिद्धान्त बाबे रे रग-रग में रमग्या।
शरणागतां रे भी मानस में जमग्या।
जीवन में खाई न हार॥३॥ भिक्षु चरमोत्सव....

धर्माधर्म न्याय बाबो खुलकर बतावतो।
कड़वी बात कहतां भी भय नहिं खावतो।
चूक्या वीर छद्मस्थ काल॥४॥ भिक्षु चरमोत्सव....

बाबे री वाणी ने जो कोई धारसी।
भव-भव में भटकती आत्मा ने तारसी।
गावे मुनि 'कमल' कुमार॥५॥ भिक्षु चरमोत्सव....

तर्ज : भिक्षु का नाम चमत्कार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१४

भिक्षु-भिक्षु जप अभिधान, इससे हो तेरा कल्याण।

भिक्षु नाम से हो शांति, मिट जाये सारी भ्रांति।
पूरे हो सारे अरमान॥१॥

तेरापथ के हैं स्वामी, हम सबके अन्तर्यामी।
सबको सन्मति करो प्रदान॥२॥

कष्ट अनेकों ही सहकर, अपनी धुन में ही रहकर।
छोड़ा कभी न अपना भान॥३॥

भोजन पानी नहीं मिला, तो भी चेहरा रहा खिला।
उनको था आत्मा का ज्ञान॥४॥

तेरापथ गौरवशाली, तुलसी करते रखवाली।
संत 'कमल' ध्याऊं गुरु ध्यान॥५॥

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१५

भिक्षु नाम है सबका सहारा, जरा जप करके देखो।
ये नाम है प्यारा प्यारा ये नाम है शांति पिटारा।।
अजमा करके देखो।।

शास्त्रों का दोहन कर मक्खन निकाला।
खाएगा किस्मत वाला, तुम भी खाकर के देखो॥१॥

भिक्षु का चिन्तन है अमृत का प्याला।
दूर करे भव ज्वाला, तुम भी पीकर के देखो॥२॥

भिक्षु का पथ यह सचमुच में आला।
खुल जाता मुक्ति का ताला, तुम भी चल करके देखो॥३॥

रूपां का खोड़ा टूटा, शोभे की कारा।
है इतिहास निराला, तुम भी श्रद्धा कर देखो॥४॥

भिक्षु के जप से सब मिटता दिवाला।
हो जाता घट में उजाला, तुम भी जप करके देखो॥५॥

तर्ज : भिक्षु नाम है सबको सहारा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६

जय ज्योतिर्मय जगदीश।
पावन श्री चरणों में, पावन श्री चरणों में सदा नमायें शीश ।।ध्रुव ।।

तेरापंथ प्रणेता, दीपां के नन्दन।
भक्ति भाव श्रद्धायुत, स्वीकारो वंदन॥१॥ जय ज्योतिर्मय...

राग-द्वेष तज तुमने, समता अपनाई।
तप संयम की सौरभ, चिहुं दिशि में छाई॥२॥ जय ज्योतिर्मय...

पंथ तुम्हारा उत्तम, उत्तम नर पाता।
भव ज्वाला उपशम कर शाश्वत सुख पाता॥३॥ जय ज्योतिर्मय...

थे दुश्मन जो जग में, मित्र बने प्यारे।
करूणागर गुरु भिक्षु, जग के उजियारे॥ जय ज्योतिर्मय...

नाम तुम्हारा मंगल, सब दुख दूर करे।
शरणागत सौभागी, पग-पग विजय वरे॥ जय ज्योतिर्मय...

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१७

हमें दो सन्मति का वरदान रे, गुणवान रे, गतिमान रे।
ओ श्रीभिक्षु भगवान।।ध्रुव।।

मन मंदिर में देव पधारो, करुणासागर पलक पसारो।
संकट मोचक भिक्षु स्वामी, अब कर दो तुम कल्याण रे॥१॥

उत्साहित है सबका कण-कण चरणों में नत मस्तक अर्पण।
तुम ही हो प्रभु सबके दर्पण, चाहते हैं निज उत्थान रे॥२॥

हम सब प्रभुवर हैं आभारी, पाकर तेरापथ सुखकारी।
कल्पवृक्ष सम संघ तुम्हारा, है नन्दन वन उद्यान रे॥३॥

उन्नति पथ पर बढ़ते जायें, पल-पल प्रभुवर तुमको ध्यायें।
हर्षोल्लास सहित मिल जुल कर कमल करे गुणगान रे॥४॥

तर्ज : धरा पर उतरा स्वर्ग विमान रे.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१८

भिक्षु चरणां में मिलजुल कर श्रद्धा स्यूं शीश झुकावां।
श्रद्धा स्यूं शीश झुकावां, गुण गरिमां गा हर्षावां जी।।

कांठे में कण्टालियो है, जन्म स्थान सुखकारी।
बल्लुसा रा पुत्र आप मां दीपां कूख उजाली॥
संकलेचा थांरी जात जी, चहुं दिशि में सुन्दर ख्यात जी।
बलिदानां री काण्यां सुण-सुण, रोमांचित हो जावां जी॥१॥

द्रव्य दीक्षा स्वीकारी बगड़ी रघु राजा रै कर स्यूं।
राजनगर में बोध हुयो फिर सोच्यो हो अन्तर स्यूं।
कथनी करनी में फर्क जी, करणी गुरु चरणां तर्क जी।
(है दान दया में फर्क जी) (करणी गुरु चरणां तर्क जी)
दो-दो वर्षां प्रश्न कर्‌या, धीरज ने किती सरावां जी॥२॥

चैत सुदी नवमी बगड़ी स्यूं, गण री ममता त्यागी।
स्थान नहीं तो समसाणां में, रह्या आप वैरागी।
नहीं कष्टां रो हो पार जी, नहीं स्थान और नहीं आर जी।
मर पूरा देस्यां आ थांरी, हिम्मत सुण चकरांवां जी॥३॥

आसाढ़ी पूनम दिन शहर केलवे में ली दीक्षा।
दीक्षा देणे स्यूं पहली करता हा कड़ी परीक्षा।
हो सिद्धांतां रो ज्ञानजी, करणो चाहता कल्याणजी।
विस्मयकारी बाबै री बाध्योड़ी मर्यादावां जी॥४॥

सिरियारी पावस में अनशन करके स्वर्ग सिधाया।
संथारे पर आस-पास स्यूं संत सत्यां भी आया।
किन्हों निज खेवो पार जी, गावे मुनि 'कमल' कुमार जी।
लियो जिसो ही पार लगायो, बलिहारी म्हे जावां जी॥५॥

तर्ज : मारूजी थारै देश में आ रेलगाड़ी आई.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१९

श्री जयाचार्य की गौरव गाथा गाएंगे।
सादर-सविनय शत-शत शीश नमायेंगे।।ध्रुव।।

रोयट में जन्म सुहाया, था कल्लू मां का जाया।
पिता आईदान का प्यारा, जन-जन का भाग्य जगाया।
भुला न पायेंगे॥१॥

श्री भारीमाल से शिक्षा, श्री ऋषिराय कर दीक्षा।
शास्त्रों की गहन समीक्षा, करते तज सकल प्रतीक्षा।
सदा सुनायेंगे॥२॥

अनुशास्ता तपसी ध्यानी आगम के गहरे ज्ञानी।
कुल डेढ़ मास में घर के, तर गए हैं चारों प्राणी।
भाग्य सरायेंगे॥३॥

जीवन था पावन निर्मल, थे जागरूक हर पल-पल।
लेखक कवि दूरदर्शी थे, स्वाध्यायी प्रतिपल निश्छल।
मिलजुल ध्यायेंगे॥४॥

तर्ज : कर ले वास निवास.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०

मघवा गुरुवर रा गुणगान, अविराम गांवां।
श्रद्धा भक्ति रा दो फूल, चरणां में चढ़ावां।।ध्रुव।।

पूरणमलजी रा हा जाया, मां बन्ना रा पूत कहाया।
बेगवानी बीदासर रा आपां भाग्य सरावां॥१॥

जयाचार्य स्यूं पाई शिक्षा, जयाचार्य स्यूं पाई दीक्षा।
समिति गुप्ति में सचेत म्हे विशेष पावां॥२॥

तन मन बांरो कोमल भारी, बाल ब्रह्मचारी अविकारी।
दिन-दिन चढ़तो बढ़तो तेज ओज किंयां बतावां॥३॥

लघुवय में पण्डित कहलाया, चार तीर्थ नें घणा सुहाया।
चूरू युवाचार्य पद पायो, सारा स्मृति में ल्यावां॥४॥

जयपुर पंचम पाट विराज्या, निर्भय सदा सिंह ज्यूं गाज्या।
बांरी अनुभव वाणी जन कल्याणी सब अपनावां॥५॥

चैत कृष्ण पांचम दिन आयो, मुनि कालू अनशन अदरायो।
शहर सरदार जम्मड़ भवन किंयां बिसरावां॥६॥

(स्वर्ग सिधाया पांचम रात्रि किंया विसरावां)
वर्षीरो दिन आज मनावां, शत शत चरणां शीश नमावां।
'कमल' है अनंत उपकार, बदलो किंया चुकावां॥७॥

तर्ज : स्वामी भीखणजी रो नाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२१

माणकगणी री स्वर्गारोहण तिथि रो लाभ उठावां।
करके आयंबिल श्रद्धास्यूं चरणां भेंट चढ़ावां।।ध्रुव।।

हुकमचंद रा लाल कहाया, छोटा मां रा हा बे जाया।
जन्म जयपुर गोत्र खारड़, सारा स्मृति में ल्यांवां॥१॥

बचपन में मां बाप सिधाया, दुख रा बादलिया उमड़ाया।
बाबे लिछमण दास पाल्या पोस्या म्हे बतलावां॥२॥

जयाचार्य स्यूं पाई शिक्षा, जयाचार्य स्यूं पाई दीक्षा।
मघजी लारे चाहिजे युक्ति किंयां भूल पावां॥३॥

जय मघवा री करुणा भारी, शिष्य सुगुरु री ही इकतारी।
घटना जीवन री अनेक गा गा किती बतावां॥४॥

चैत्र बदि द्वितीया दिन आयो, सरदारशहर रो भाग्य सवायो।
युवाचार्य पद मघवा गुरुवर कर सुण हर्षावां॥५॥

कार्तिक कृष्णा तृतीया आई, घोर वेदना रूं रूं छाई।
सुजानगढ़ में स्वर्गारोहण किंयां बिसरावां॥६॥

अकस्मात् गुरु स्वर्ग सिधाया, पिछलो निर्णय कर नहीं पाया।
संघ-संघपति बिना संघ? देख चकरावां॥७॥

राजधानी रो भाग्य खिल्यो है, मुनि गणेश रो जोग मिल्यो है।
'कमल' श्रद्धा स्यूं चरणां में, शत शत शीश नमावां॥८॥

तर्ज : स्वामी भीखणजी रो नाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२२

डालगणी रो उपकार किंयां भूल जावां।
स्वर्गारोहण तिथि पर गुरुवर गरिमा स्मृति में ल्यावां।।ध्रुव।।

मात जड़ावां जी रा जाया, कनीराम रा पूत कहाया।
जन्मस्थान उज्जयनी ने नहीं बिसरावां॥१॥

हीरालाल मुनिवर स्यूं दीक्षा पाई उत्तम-उत्तम शिक्षा।
पुर इन्दौर को इतिहास ओ म्हे बतलावां॥२॥

जयाचार्य रा शिष्य कहाया, दीक्षित कर गुरु चरणां ल्याया।
आ दलाली हीरालाल मुनि री सब सरावां॥३॥

अगवानी बन विचर्‌या वर्षां घेरो घाल्यो हो संघर्षां।
स्थितियां सहन करी ही आप सारी समभावां॥४॥

कालूजी जब नाम बतायो, सारे गण रो मन हुलसायो।
जबरो संघ रो भानूड़ो, सारा शीश नमावां॥५॥

शहर लाडणूं जब पधराया, संत सत्यां भी दौड़्या आया।
गा-गा स्वागत गीत मन रा सारा कोड पुरावां॥६॥

कालू मुनि जब बात बताई, मनगमुनि सब कुछ समझाई।
म्हे तो म्हांरो गणनाथ खाली फर्ज निभावां॥७॥

डालगणी प्रवचन रा रसिया, चारतीर्थ रे रूं रूं बसिया।
मंगल गावां मौज मनावां, मोत्यां चोक पुरावां॥८॥

बारह वर्षां राज कर्‌यो हो, जन-जन रो सन्ताप हर्‌यो हो।
बां रो हो प्रचंड तेज गा गा कितो बतावां॥९॥

प्रतिक्रमण करके पोढ़ाया, मगन मुनि झट सम्मुख आया।
पचखायो संथारो झटपट, चढ़ते-बढ़ते भावां॥१०॥

भाद्रवी बारस स्वर्ग सिधाया, डालगणी जन-जन अति भाया।
'कमल' सविनय चरणां शत-शत श्रद्धांजलि चढ़ावां॥११॥

तर्ज : स्वामी भीखणजी रो नाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२३

गावो-गावो-गावो-गावो गुरु रा गुण गावो हो।
कालू कुलमणि ध्यावो रात दिन।।ध्रुव।।

फागण सुदी दूज दिन छापर में जन्म पायो हो।
हिवड़ो हुलसायो छोगां मात रो॥१॥

छोटी सी उमर मांही करग्या तात काल हो।
दुख रा बादलिया आकर घेरिया॥२॥

होणहार था कालूगणि फंदे में नहीं फसिया हो।
हिवड़ो लगायो धर्मध्यान में॥३॥

(कोटासर) डूंगरगढ़ ननिहाल गया माताजी रे साथ में।
करता संतां री बठे संगति॥४॥

धीरे-धीरे संग जिस्यो रंग बामै आयो हो।
बणग्या बैरागी छोटी उम्र में॥५॥

मघवागणि रे कर कमला स्यूं संयम आप आदर्‌यो।
करवा न लाग्या अन्तर साधना॥६॥

मघवा माणक डाल सबस्यूं पाई उत्तम शिक्षा हो।
डालगणि स्यूं गणि पद पावियो॥७॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देश प्रदेश घूम घूम कर, कर्‌यो धर्म प्रचार हो।
खूब दीपायो धर्मसंघ ने॥८॥

साल तेणमें गंगापुर में अंतिम पावस कीन्हो हो।
स्वर्ग सिधाया भाद्रव छठ ने॥९॥

बांरो ही उपकार है जो बालू मांरो जायो हो।
सार संभाल करे आपणी॥१०॥

गांवूं किता गुण गुरू रा गुणां रो नहीं पार हो।
गातां थाके नहीं म्हांरी जीभड़ी॥११॥

जन्म दिवस ने मिलजुल सारा खूब मनावां ठाठस्यूं।
छापुर पुर में आनन्द छावियो॥१२॥

केवे है 'कमल' मुनि शासन ओ जयवंतो हो।
नन्दन वन री देवूं ओपमा।
चिन्तामणी री देवूं ओपमा।
कल्पतरु री देवूं ओपमा॥३॥

तर्ज : तेजा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२४

कालूगणी रो उपकार, भैक्षव शासन में अनपार।
जैन शासन री महिमा महकाई, प्रभुवर अपरम्पार।
श्रीवर अष्टम गुरुराज, जैन शासन रा सिरताज।
करग्या-करग्या नैया पार।।ध्रुव।।

मां छोगा रा लाल छापुर पुर में जन्म पायो हो।
लाल रो सुण जन्म सब परिजन हर्षायो हो।
मूलचंदजी रे छायो मन हर्ष अपार॥१॥

छोटी सी उमर मांही तज्यो हो संसार ने।
देशाटन कर्‌यो हो आप, संयम व्रतधार ने।
करके विनयभाव भर्‌यो खूब ज्ञान रो भंडार॥२॥

मघवागणी रे कर कमलां स्यूं पाई आप दीक्षा हो।
मघवा, माणक, डाल सब स्यूं पाई उत्तम शिक्षा हो।
हो बो मनमोहक व्यक्तित्व देव रूप हो साकार॥३॥

डालगणी रे कर कमला स्यूं आचारज पद पायो हो।
अष्टम अधिनेता गुरुवर रो नाम घर-घर छायो हो।
संत-सत्यां में भी खूब कर्‌यो ज्ञान रो संचार॥४॥

साल तेणमें गंगापुर में अंतिम पावस कीन्हों हो।
भाद्रव शुक्ला तीज दिन तुलसी ने गणिपद दीन्हों हो।
सुदि भादवे री छट्ठ कर्‌यो स्वर्ग विहार॥५॥

तर्ज : शासन कल्पतरु.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२५

ओम जय-जय-जय गण ताज।
प्रभु के जन्म दिवस पर, खुशियां बे अंदाज।।ध्रुव।।

द्वितीया के दिन जन्मे, गुरुवर छापुर में।
बीदासर संयम ले, विचरे पुर-पुर में॥१॥

गुरु आज्ञा की पल-पल रखते निगरानी।
चन्देरी में शुभ दिन, गण के सैनानी॥२॥

गंगापुर पावस में, रोग हुआ भारी।
सुदी छट्ठ भाद्रव दिन, तज गये गण क्यारी॥३॥

जन्म दिवस पर प्रभु का, करते अभिनन्दन।
करुणासागर प्रभुवर, स्वीकारो वंदन॥४॥

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२६

ओम् जय अन्तर्यामी।
वदना नन्दन तुलसी, वदना नन्दन तुलसी।
भक्तों के स्वामी, ओम जय अन्तर्यामी।।ध्रुव।।

तूं है सच्चा स्वामी, तूं ही है त्राता।
तू ही है परमेश्वर, तूं घट-घट ज्ञाता॥१॥

तेरे बिन नहीं कोई, जग में रखवाला।
अब तो शीघ्र दिखाओ, पथ शिव पुर वाला॥२॥

तरस रहे हैं भगवन, नैया पार करो।
हम हैं भक्त तुम्हारे, सबकी प्यास हरो॥३॥

तूं चिन्तामणि प्रभुवर, तूं है कल्पतरू।
संकट मोचन तूं है, तेरा ध्यान धरूं॥४॥

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२७

तुलसी गुरुवर चरणों में, शत-शत प्रणाम हो।
जन मानस की आस्था के, तुम एक धाम हो।।ध्रुव।।

हे नाथ आपको पाकर, सब कुछ ही पा लिया।
तुम ही मीरां के गिरधर, सबरी के राम हो॥१॥

जन-जन के भाग्य विधाता, निष्कारण उपकारी।
अंतरतम हरने वाला, तेरा पैगाम हो॥२॥

नतमस्तक हैं चरणों में श्रावक गण आपके।
गुरु की करूणा दृष्टि से, सबको आराम हो॥३॥

अतिशयधारी अविकारी, उत्तम आचार है।
अरहंतों के प्रतिनिधि तुम, जन मन विश्राम हो॥४॥

तर्ज : प्रभु पार्श्व देव चरणों में.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२८

तेरापंथ रा हा ताज, जैन शासन रा सिरताज।
करग्या करग्या नैया पार।
म्हारै हिवड़े रा हार, म्हारे प्राणा रा आधार।
म्हारै तुलसी गुरु ने करूं वंदन बार हजार।।ध्रुव।।

मां वदना रा लाल लाडनूं में जन्म पायो है।
लाल रो सुण जन्म सब परिजन हर्षायो है।
झूमरमलजी रे छायो मन हर्ष अपार॥१॥

छोटी सी उमर मांही तज्यो है संसार ने।
धन्य-धन्य केवे सारा मां वदना रे लाल ने।
कर गुरु सूं विनय भर्‌यो ज्ञान रो भण्डार॥२॥

सोलह वर्षां री उमर में बणग्या आप शिक्षक हो।
कालूगणी जोर का हा निश्चित ही परीक्षक हो।
ढूंढ काढ्यो हीरो चन्देरी स्यूं देखो जोरदार॥३॥

साल तेणमें गंगापुर में भाद्रव तीज आई हो।
कालूगणी के देह में व्याधि जोर खाई हो।
सौंप दियो तुलसी गुरु ने सारो शासन भार॥४॥

बावीस वर्षां री वय में आचारज पद पायो हो।
नीरख गुरु री सूरत सबरो हिवड़ो हर्षायो हो।
मानण लाग गया सगला ही आपरो आधार॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौतीस वर्षां री वय में अणु अभियान चलायो हो।
अणुव्रत रे माध्यम सूं ही जग में नाम छायो हो।
होण लाग गयो धूमधाम धर्म प्रचार॥६॥

देश प्रदेश धूम कर्‌यो धर्म प्रचार हो।
सह्या घणां कष्ट रायपुर चूरू बाजार हो।
बांरी हिम्मत रे के केणो बांरी हिम्मत अपरम्पार॥७॥

निर्धन हो धनवान सबने संयम पथ दिखलायो हो।
ज्ञान रूपी दान देकर जीवन सफल बणायो हो।
गुण गाया देशनोक मांही 'कमल कुमार'॥८॥

तर्ज : भलके भानूड़ो सो माल.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२९

ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर जावां म्हे बलिहारी ।।ध्रुव ।।

बालपणे में दीक्षा लेकर बण्या बाल ब्रह्मचारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥१॥

छः भायां रा भाई लाडला बण्या जगत अधिकारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥२॥

वीर प्रभु रा प्रतिनिधि बणकर कर्‌यो काम थे भारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥३॥

लम्बी-लम्बी करी जातरा बनकर उग्र विहारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥४॥

मुंबई कलकत्तों थे फरस्यो फरसी कन्याकुमारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥५॥

लगभग सात सौ साध साध्वी है सब में इकतारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥६॥

युग प्रधान नवम आचारज छत्तीए गुणों के धारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥७॥

देश विदेशा फैली भगवन् महिमां थांरी भारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥८॥

'कमल' मुनि ने लागे गुरुवर वाणी थांरी प्यारी।
ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर॥९॥

तर्ज : ओम् ओम् ओम् श्री तुलसी गुरुवर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३०

ई शासनपति री महिमा च्यारूं कूंटां छाई है।
जन्म जयन्ति रे अवसर पर खूब बधाई है।।ध्रुव।।

पांव-पांव चलकर गुरुवर आ धरती सारी नापी है।
गुरुवर री हिम्मत ने लखकर काया सबरी कांपी है।
संघ संघपति री सचमुच जबरी पुन्याई है॥१॥

ईसो मान सम्मान जगत में विरला ही मानव पावै।
और कहूं अपमान आपसो विरला ही सहणै पावै।
हर स्थिति में गणिवर अद्‌भुत समता दिखलाई है॥२॥

भी. भा. रा. ज. म. मा. डा. का औ तुलसी नवमें पाट जी।
चार तीर्थ रा जबरा लाग्या गुरु चरणां में ठाट जी।
जनमानस की सुप्त चेतना आप जगाई है॥३॥

नया-नया आयाम खोलकर शासन ने चमकायो है।
अनुशासन में विश्व क्षितिज पर पहलो नम्बर पायो है।
प्रगति देख गण की औरां री मति चकराई है॥४॥

बड़ा-बड़ा भूचालां मे भी हिम्मत कभी न हारी रे।
वदना नन्दन री जांवां म्हे बार-बार बलिहारी रे।
सुखमय जीवन जीणे री थे कला सिखाई है।
संयममय जीवन जीणे री शुभ कला सिखाई है॥५॥

तर्ज : बाबासा री लाडली.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३१

वदना मां री कूख उजाली, म्हांरा तेजस्वी गणमाली।
आं गण देव रे इशारे सारो संघ चालै.....।।
आंरी पुन्याई ने देख, सब थुथकारो घालै।
आंरी कंठकला ने देख, सब थुथकारो घालै।
आंरी साधना ने देख, सब थुथकारो घालै।
आं गण देव रे.....।।ध्रुव।।

कार्तिक शुक्ला द्वितीया रे दिन ऊग्यो स्वर्ण प्रभात रे।
शिक्षा दीक्षा शहर लाडनूं कालू गुरु रे हाथ रे।
मर्यादित शासन आपां रो वसुधा में विख्यात रे।
बाल ब्रह्मचारी अविकारी आपांणा गणनाथ रे।
गुरु गुण गान आज मिल गावां भव-भव संचित कर्म खपावां।
आं गण देव रे.....॥१॥

पंथ घणा ही देख्या जग में इस्यो न म्हांने पंथ मिल्यो।
देख-देख अनुशासन गण रो म्हांरो मानस कमल खिल्यो।
गण ने ठेस पुगावण वालो आखिर बो ही स्वयं हिल्यो।
ओरां ने जो क्षति पहुंचावे आखिर बोही स्वयं पिल्यो।
म्हे सब म्हांरा भाग्य सरावां, गुरु दृष्टि हित पलक बिछावां।
आं गण देव रे.....॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु को द्रोही हर को द्रोही गावे सब संसार है।
बां को संग करो मत कोई यदि करणो उद्धार है।
गुरु दृष्टि ही जीवन सृष्टि साफ-साफ उद्‌गार है।
गुरुवर पर श्रद्धा राख्यां भव-भव स्यूं बेड़ा पार है।
नन्दन वन सो अपणो शासन गणरो है सुदृढ़ अनुशासन।
आं गण देव रे इशारे.....॥३॥

अखिल विश्व में वदना नन्दन रो व्यक्तित्व विराट् रे।
बारह ही महिना रेवे है चार तीर्थ रा ठाठ रे।
शरणागत रा पल भर में ही दूर करे उच्चाट रे।
भैक्षव गण ने खूब दीपायो जग में नवमों पाट रे।
जन्मोत्सव मिल आज मनावां म्हे सब फूल्या नहीं समावां।
आं गण देव रे इशारे.....॥४॥

तर्ज : सिरियारी रो संत.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३२

ओम् तुलसी तुलसी सब सुमरो।
सब सुमरो अन्तर तिमिर हरो।
ओम् तुलसी.....।।ध्रुव।।

जो निश्छल मन गुण गायेगा।
वह अजरामर पद पायेगा।
गुरुवाणी पर विश्वास करो।
ओम् तुलसी.....॥१॥

कंचन कामिनी के त्यागी हैं।
इक प्रीत वीर से लागी है।
त्यागी गुरु चरण में शीश धरो।
ओम् तुलसी.....॥२॥

हम सबका भाग्य सवाया है।
ऐसा गुरु हमने पाया है।
गुरु वाणी सुन दिल ध्यान धरो।
ओम् तुलसी.....॥३॥

तुलसी ही सच्चा त्राता है।
तुलसी ही घट-घट ज्ञाता है।
गुरु शिक्षा अन्तर हृदय धरो।
ओम् तुलसी.....॥४॥

मुनि 'कमल' सदा यों गाता है।
तुलसी ही भाग्य विधाता है।
गुरु गुण अपनाकर विजय वरो।
ओम् तुलसी.....॥५॥

तर्ज : ओम् शांति जिनेश्वर शान्ति करो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३३

तुलसी राम भजो तुलसीराम भजो।
तारण तिरण जहाज तुलसीराम भजो।
जैन जगत रा ताज, तुलसीराम भजो।। तुलसी.. ।।ध्रुव।।

तुलसी प्रभु का तेज निराला।
हरता झट भव-दव की ज्वाला।
दुर्गति के दे देता ताला॥
होता सहज उजाला। तुलसीराम.....॥१॥

भाग्यवान हम तुमको पाकर।
तुम हो प्रभु करुणा के सागर।
दिव्य दिवाकर लोक उजागर।
अगणित गुण के सागर। तुलसीराम.....॥२॥

तेरापथ के तुम अधिनेता।
शिक्षाप्रद साहित्य प्रणेता।
नय निर्णेता संस्कृत वेत्ता।
अद्भुत आत्म विजेता॥ तुलसीराम.....॥३॥

सन्त 'कमल' है भक्त तुम्हारा।
तूं अनगिन आंखों का तारा।
भक्तों का है नयन सितारा।
प्राणों से भी प्यारा॥ तुलसीराम.....॥४॥

तर्ज : तुमको लाखों प्रणाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३४

गुण गायें गुण, तू है निपुण, गायें सुबह शाम।
जय जय तुलसी जय भगवान-२।।ध्रुव।।

समता रस जो पीते,
क्रोध, मान, माया, लोभ जीते,
उनके चरणों में झुकते।
मानव क्या अरे फरिश्ते॥१॥
हो हो.....गुण.....भगवान.....

ममता का रोग मिटाते,
मुक्ति का पथ बतलाते।
जो भी शरण में आते।
भव-भव से पार लगाते॥२॥
हो हो.....गुण.....भगवान.....

राही को राह दिखाते।
अन्तर तिमिर मिटाते।
धर्माधर्म बताकर।
ज्ञान की ज्योति जगाते॥३॥
हो हो.....गुण.....भगवान.....

तर्ज : दम दम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३५

मेरा चंचल मन विषयों में भटके आत्माराम मिले कैसे?
मुझे मुक्ति का रास्ता बताओ तुलसी आत्माराम मिले कैसे?
मेरा चंचल.....।।ध्रुव।।

चूल्हे की तो आग तुलसी पाणी से बुझेगी।
ये अन्दर की आग बुझे कैसे?
आत्माराम.....॥१॥

कपड़े का तो मैल तुलसी साबुन से कटेगा।
ये अन्दर का मैल कटे कैसे?
आत्माराम.....॥२॥

तन की तो भूख तुलसी अन्न से मिटेगी।
ये आत्मा की भूख मिटे कैसे?
आत्माराम.....॥३॥

शेरणी के बच्चे को बांध के दिखा दूं।
इस मन घोड़े को बांधू कैसे?
आत्माराम.....॥४॥

पुस्तक के तो अक्षर तुलसी बांच के दिखा दूं।
ये मस्तक की रेखा बंचे कैसे?
आत्माराम.....॥५॥

तर्ज : बिछुड़े राम मिले कैसे.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३६

सुगुरु रा गुण मैं गाऊं गाऊं गाऊं रे।
श्री चरणां में सादर सविनय शीश नमाऊं रे।।ध्रुव।।

पुण्याई रा प्रबल पोरसा मां वदना रा लाल।
चेहरो गुरु रो चमके चम-चम तप स्यूं झलकै भाल॥१॥

एक डोर में संघ चले है बड़ी जोर की बात।
म्हे म्हांरा तकदीर सरावां मिल्या आप सा नाथ॥२॥

महाप्रज्ञ री महिमा फैली मुलक-मुलक में आज।
महानिदेशिका रे कामां पर गण ने पूरो नाज॥३॥

महाश्रमण री विनय नम्रता, अनुपमेय अभिराम।
सहज्यां! म्हांरा सिर झुक जावे निकसै मुख गुणग्राम॥४॥

है व्यक्तित्व आपरो गुरुवर दिग् दिगन्त विख्यात।
तेरापथ ने है फैलायो पार समन्दर सात॥५॥

तर्ज : गुण घुघरू.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३७

आज सुगुरु के दर्शन पाकर, खुशियां अपरम्पार जी।
विनय भाव पंचांग प्रणति पूर्वक वन्दन शत बार जी।।ध्रुव।।

शहर लाडनूं शिक्षा दीक्षा कालू गुरु के हाथ से।
कौन अपरिचित आज विश्व में श्री तुलसी गणनाथ से।
घूम-घूम कर गांव-गांव में, करते धर्म प्रचार जी॥
आज सुगुरु के.....॥१॥

गुरु माता, गुरु पिता सुगुरु ही भरते सत्संस्कार जी।
अधमी का भी कर देते हैं पलभर में उद्धार जी।
गुरुवर की शुभ दृष्टि से हो जाता बेड़ा पार जी॥
आज सुगुरु के..... .....॥२॥

सुगुरु-दृष्टि से रज-कण भी बन जाता मेरू समानजी।
अंधे को दृष्टि मिल जाती, गूंगा गाता गान जी।
सुगुरु दृष्टि ही हम सब बच्चों का जीवन आधार जी॥
आज सुगुरु के.....॥३॥

तर्ज : बाजरे री रोटी पोपी फोफलिया.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३८

चिर यौवन को पुण्य प्रणाम।
जन-जन की आस्था के राम।
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम।।ध्रुव।।

मां वदना का अंगज प्यारा, कालू कर संयम स्वीकारा।
परम विरागी, सच्चे त्यागी, प्रतिपल कदम बढ़े अविराम॥
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम.....॥१॥

बाल ब्रह्मचारी अविकारी, दृढ़ संकल्पी पाद विहारी।
शुद्धाचारी, भव भय हारी, विश्व क्षितिज पर चमका नाम॥
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम.....॥२॥

सघन अंधेर में उजियारा, होता अणुव्रत प्रेक्षा द्वारा।
दृष्टि प्रदाता, भाग्य विधाता, वरो सुयश गुरुवर अभिराम॥
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम.....॥३॥

आगम संपादक सुखदायक, जैन एकता के संगायक।
अन्तर्यामी, जन-जन स्वामी, प्रतिपल चिन्तन प्रवर प्रकाम।
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम.....॥४॥

अन्तर को हम स्वच्छ बनाएं, तव आदर्शों को अपनाएं।
बन अनुयायी, सच्चे राही, पायें अजरामर हम धाम।
चिर यौवन को पुण्य प्रणाम.....॥५॥

तर्ज : .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३९

संचित कर्म खपायें।
निज कर्त्तव्य निभायें।
पुण्य तिथी पर सादर श्रद्धा पूर्वक शीश नमायें।
संचित कर्म खपायें।।ध्रुव।।

भैक्षव गण के नवमें पटधर श्री तुलसी गुरु प्यारे।
माता वदनाजी के नन्दन जन-जन नयन सितारे।
बाल ब्रह्मचारी अविकारी राष्ट्र संत को ध्यायें॥
गुरुवर के गुण गायें॥१॥

नये-नये आयाम चला कर धर्म ध्वजा फहराई।
सकल विश्व में भैक्षव गण की महिमा खूब बढ़ाई।
गुरुवर का उपकार स्मरण कर अपने भाग्य सरायें॥
गुरुवर के गुण गायें॥२॥

नया मोड़ अणुव्रत प्रेक्षा से जन-जन का मन जोड़ा।
घोर-घोर विपदाओं में भी लक्षित पथ ना छोड़ा।
कवि लेखक वक्ता अनुशास्ता गुरु को ना बिसराएं॥
गुरुवर के गुण गायें॥३॥

पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण घूम घूम कर नापा।
चिर युवा थे अंत समय तक आया नहीं बुढ़ापा।
पुण्यतिथी पर कमल सभी मिल गुरुवर के गुण गायें।
तेरापंथ भवन में मिल जुल गुरुवर के गुण गायें।
कर्नाटक मैसूर शहर में स्मृति का दिवस मनाएं॥
गुरुवर के गुण गायें॥४॥

तर्ज : संयम मय जीवन हो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४०

गुरुदेव मुझे पल-पल तेरी याद सताती है।
जब-जब स्मृतियां होती, अंखियां भर जाती है।।ध्रुव।।

उपकार अनन्त किया वह कैसे बतलाऊं।
हर वक्त यही मन में चरणों में पहुंच जाऊं।
जो मिली थी वत्सलता वह जीवन की थाती है॥१॥

सोचा न कभी ऐसा, प्रभु यूं ही जायेंगे।
हम चरणों के चाकर यूं ही रह जायेंगे।
जो गुरु से मिलवाये वही असली साथी है।
(बिछुड़े गुरु मिलवाये वही असली साथी है)॥२॥

प्रभु सात दिनों पहले तुमने तो लिख डाला।
है भूल हुई भारी हमने ना संभाला।
इतिहास गये रचकर वह स्वर्णिम ख्याति है॥३॥

धरती पर गुरुओं की है कमी नहीं प्रभुवर।
पर मेरे लिये सब कुछ थे आप ही तो गुरुवर।
वह विधा बताओ अब जो पुनः मिलाती है॥४॥

बन निर्मोही गुरु ने हर तरह से दिखलाया।
प्रमुखाजी बैठी थी उनको भी भिजवाया।
क्या कहे 'कमल' किसको कुछ समझ न आती है॥५॥

तर्ज : इक प्यार का नगमा है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४१

म्हाने गुरुवर रो शरणो है, भवजल पार उतारणो ।।ध्रुव ।।

तोलारामजी रा है जाया, मां बालू रा लाल कहाया।
निर्मल चित्त उदार॥१॥

कालू गुरु स्यूं पाई दीक्षा, प्राप्त करी है उत्तम शिक्षा।
जिन शासन शृंगार॥२॥

बाल ब्रह्मचारी अविकारी, जन्म जन्म रा संकट हारी।
भक्तां रा आधार॥३॥

गुरु की यदि करुणा हो ज्यावै, अंधा देखे गूंगा गावे।
होज्या जय जय कार॥४॥

गुरु शिक्षा रो पीकर प्यालो, जीवन ने सरसब्ज बना लो।
गावै कमल कुमार॥५॥

तर्ज : राजाजी रे बागे में.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४२

महाप्रज्ञ की गौरव गाथा गायेंगे, महाप्रज्ञ का नाम हम चमकायेंगे।
तुलसी गुरु की कुशल कृति बतलायेंगे।।ध्रुव।।

तुलसी गुरु की सब माया, जो महाप्रज्ञ को पाया।
आचार्य बना खुद रहते, अद्‌भुत इतिहास बनाया।
ना बिसरायेंगे, महाप्रज्ञ की गौरव.....॥१॥

तुलसी महाप्रज्ञ की जोड़ी, कुदरत ने कैसे तोड़ी?
यह जोड़ी क्या थी मानो, थी मुक्ति नगर की पौड़ी।
कहां अब पायेंगे, महाप्रज्ञ की गौरव.....॥२॥

महाप्रज्ञ हैं महामनस्वी, महाप्रज्ञ बड़े वर्चस्वी।
गहराई से सब देखो, आत्मस्थित है परम यशस्वी।
सुयश बढ़ायेंगे, महाप्रज्ञ की गौरव.....॥३॥

महाप्रज्ञ हमारे गुरुवर, चिंतामणि कल्पतरुवर।
जिन-जिन पर इनकी दृष्टि, वे बनते प्रज्ञा सरवर।
स्वात्म सुख पायेंगे, महाप्रज्ञ की गौरव.....॥४॥

करते हम शत-शत वंदन, जय हो जय बालू नन्दन।
देकर के अब सद्‌बुद्धि, मेटो भव का आक्रन्दन।
अमर बन जायेंगे, 'कमल' खिल जायेंगे॥
महाप्रज्ञ की गौरव.....॥५॥

तर्ज : करते वास निवास.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४३

जिनके स्मरण मात्र से मिटता दिल का सकल अंधेरा।
वह धर्म गुरु है मेरा.....।
जिनकी कृपा दृष्टि से उठता सब दुक्खों का डेरा।
वह धर्म गुरु है मेरा.....।।ध्रुव।।

तोला बालू के हैं नन्दन जन-जन नयन सितारे।
बाल ब्रह्मचारी अविकारी प्राणों से भी प्यारे।
जिनके चरण स्पर्श करने से होता नव्य सवेरा॥
वह धर्म गुरु है मेरा.....॥१॥

हिन्दी संस्कृत प्राकृत भाषा के हैं गहरे ज्ञाता।
शरणागत पावन बन जाता पल-पल आनंद पाता।
है आकाश तुल्य विशाल दिल क्या मेरा क्या तेरा।
वह धर्म गुरु है मेरा.....॥२॥

हिन्दु, मुस्लिम, जैन, अजैन, सभी के मन को जीता।
आध्यात्मिक ग्रंथों के लेखक ज्यों रामायण गीता।
चार तीर्थ का गुरु चरणों में रहता है नित घेरा।
वह धर्म गुरु है मेरा.....॥३॥

तर्ज : जहां डाल डाल पर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४४

जय महाप्रज्ञ गुरुवर।
करते शत-शत वन्दन-२
चरणों में झुककर।।ध्रुव।।

कालू गुरु कर संयम, शिशु वय में पाया।
माता सह हो दीक्षित, इच्छित फल पाया॥१॥

तुलसी गुरु का प्रतिपल, रहा शीश साया।
विद्यार्जन कर गहरा, जीवन विकसाया॥२॥

निर्मलता गुरुवर की, जन-जन को भाई।
ज्ञान ध्यान से अनुपम, है प्रज्ञा पाई॥३॥

प्रवचन सुनने वाला, मंत्र मुग्ध होता।
जैन अजैन भले हो, कोई भी श्रोता॥४॥

भाग्योदय से हमको, मिला जैन शासन।
भिक्षु संघ का दसवां, दीप रहा आसन॥५॥

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४५

ॐ जय-जय महाश्रमण।
अभिनन्दन करता है-२।
भू नभ का कण-२।। ॐ जय।।

सुदि वैसाख मास में जन्म और दीक्षा।
मुनि सुमेरमलजी से दीक्षा औ शिक्षा॥१॥

लघुवय में संयम ले बने तत्त्वज्ञानी।
आगम आदिक पढ़कर, हर स्थिती पहचानी॥२॥

साझपति ब्यावर में, बने आप सत्वर।
संत ऋषभ सहयोगी रहते पग-पग पर॥३॥

तुलसी गुरु ने सचमुच, सब कुछ जान लिया।
महाश्रमण पद देकर, नूतन कार्य किया॥४॥

भाद्रव सुदि बारस दिन, मंगल क्षण आया।
पछेवड़ी उत्सव लख, जन मन हर्षाया॥५॥

महाप्रज्ञ गुरुवर की महिमा है न्यारी।
गंगाशहर कमल मुनि, युग-युग आभारी॥६॥

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४६

जय महाश्रमण युवराज।
चयन दिवस यह आया-२
खुशियां बे अंदाज।।ध्रुव।।

झूमर कुल उजियारे जन-जन के प्यारे।
नेमा मां के नन्दन, हृदय स्वच्छ निर्व्याज॥१॥

मुनि सुमेर चन्देरी, से पायी दीक्षा।
तुलसी गुरु का अंकन, जन-जन को है नाज॥२॥

महाप्रज्ञ की दृष्टि, बनी है शुभ सृष्टि।
युवाचार्य को पाकर पुलकित सकल समाज॥३॥

करते हैं अभिनन्दन स्वीकारो वन्दन।
युग-युग तपो धरा पर है अंतर आवाज॥४॥

पापभीरुता लखकर नत मस्तक सारे।
अगणित गुण के आगर, कमल संघ सरताज॥५॥

तर्ज : आरती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४७

आज म्हे सब मंत्री मुनि री स्मृतियां कर हर्षावांजी।
सादर सविनय श्रद्धापूर्वक शत-शत शीश नमावांजी।।ध्रुव।।

जन्म और दीक्षा गोगूंदे धन्ना मां रा लालजी।
लघु वय में ही पिता प्रेम पर भव पहुंच्या तत्कालजी।
घर की जिम्मेदारी रखता, किंयां आज बिसरावांजी॥१॥

अट्ठारह वर्षा में मघवा गुरुवर कर दीक्षा पाई।
मां बेटा जद् बण्या संयमी जन-जन में खुशियां छाई।
अप्रमत्त चर्या मुनिवर री सदा देख हुलसावांजी॥२॥

मघवागणी ने परामर्शकर्ता में नाम गिनाया था।
माणकगणी ने समय-समय पर नित सम्मान बढ़ाया था।
डालिम कालूगुरु वर की मर्जी ने स्मृति में लावांजी॥३॥

दो हजार एक चातुरगढ़, तुलसी गुरु री महर अपार।
रूक्का खास दिलाया गुरु ने, मंत्री बने सहज साकार।
गौरव बढ़ा गर्व ना किंचित हर स्थिति में सम पावांजी॥४॥

पांच-पांच पाटों की सेवा, की थी पूरी तन-मन से।
अक्सर काम किया करते गणी मंत्री मुनि के चिन्तन से।
बढ़ा मान सम्मान निरन्तर, सुन-सुन मोद मनावांजी॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कृपा हुई सरदारशहर पर, दो हजार पांच अनपार।
ग्यारह वर्ष तपे मंत्रीश्वर, घर-घर जागृति हुई अपार।
बाबो जी महाराज बाजता ठाठ अनोखो पावांजी॥६॥

सुबह शाम दोफांरा में भी लोग सैकड़ां हाजर हा।
समताशाली मंत्री मुनि रे सारा एक बराबर हा।
गुण अनंत गहरा गम्भीरा, गा गा किता बतावांजी॥७॥

बाबोजी महाराज आप म्हां सब पर दृष्टि राखिज्यो।
स्वर्गां में बैठा-बैठा भी अनुचित हो तो भाखिज्यो।
है उपकार अतुल्य आपरो कर्जों किंयां चुकावांजी॥८॥

तर्ज : बड़े भाग्य है भगिनी.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४८

मुनि गणेश री समता विशेष याद आसी।
बांरो विनय विवेक विशाल नहीं भूल्यो जासी।
बांरी साधना रा गीत जन-जन गासी।।आं।।

बाल ब्रह्मचारी अविकारी, पापभीरु मुनि शुद्धाचारी।
बांरी हितकारी शिक्षावां रोज चेते आसी॥१॥

बोल कड़कतो कदे न कहणो, कह देवे तो सीख्यो सहणो।
इस्या सत्पुरुषां रा दर्शन कोई भागी पासी॥२॥

गुरु दृष्टि पर पूर्ण समर्पण, सफल बणायो अपणो क्षण-क्षण।
दृढ़ इतिहास रो विश्वास नयो प्रकाश लासी॥३॥

महाश्रमण जी जद पधराया, बांने पाटे पर बिठलाया।
स्वयं विराज्या नीचे स्वागत में ही जनता खासी॥४॥

जीवन जीयो है अति निर्मल, सफल बणायो अपणो पल पल।
अंतिम वक्त सेवा साझी कमल वसुगढ़ वासी॥५॥

तर्ज : स्वामी भीखण रो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४९

मुनि गणेश-३ गा, जीवन में पल-पल तू आनंदमना।
चरणों में सादर तूं शीश नमा।।ध्रुव।।

सद्दू है मां पिता डूंगरमल, मेरू समान देखा मन भी अचल।
स्व पर का करते हैं प्रतिपल भला॥१॥

कालू कर संयम किया अंगीकार खूब किया घूम धर्म प्रचार।
अनगिन श्रावक दिये हैं बना॥२॥

शासनश्री नाम से हैं आप विख्यात, संयम में रत रहते दिन हो या रात।
अयाचित वसुगढ़ को अवसर मिला॥३॥

तुलसी गुरु की है महिमा अपार, जिनकी कृपा से सब स्वप्न साकार।
कमल नित गुण गाता निर्मल मना॥४॥

तर्ज : जय गणेश-३.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५०

पर्युषण पर्व मनाओ, सब हिल-मिल मंगल गाओ।
समता का स्रोत बहाओ, पर्युषण पर्व मनाओ।। ध्रुव।।

पर्युषण जब ही है आता, मानव को सद् राह दिखाता।
सब जीवन को विकसाओ॥१॥

जप-तप मिलजुल करके करना, अज्ञान तिमिर को भी है हरना।
सद्ज्ञान की ज्योति जगाओ॥२॥

समता सरिता में नित न्हाओ, अवगुण दुखदायी दफनाओ।
जीवन में संयम लाओ॥३॥

सच्ची अच्छी सीख सिखाता, क्षमा धर्म का पाठ पढ़ाता।
तप त्याग की झड़ी लगाओ॥४॥

संयम तप में जो रहते हैं, उनको पुरुषोत्तम कहते हैं।
संयमी के गुण सब गाओ॥५॥

सुनलो सब अब मेरा कहना, आठों दिन संयममय रहना।
अणुव्रत के व्रत अपनाओ॥६॥

सन्त 'कमल' का मानो कहना, तज प्रमाद स्वाध्याय में रहना।
आत्मा को स्वच्छ बनाओ॥६॥

तर्ज : निर्मलता नित्य बढ़ाओ.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५१

आई संवत्सरी-२ सारा धार्मिक बण लाभ उठावै रे।
आई संवत्सरी।। ध्रुव।।

सदिया, भदिया, कदिया सारा संवत्सरी ने आवे रे।
संवत्सरी री महिमा भारी जन-जन गावे रे।
आई संवत्सरी॥१॥

कई करे उपवास और पौषध अठ-पोरी ठावै रे।
जप स्वाध्याय ध्यान कर आत्मा विमल बणावे रे।
आई संवत्सरी॥२॥

महावीर रो जीवन चरित आदि स्यूं सुणे सहर्ष रे।
पट्टावलि आदिक सुणणे रो है अभिनव उत्कर्ष रे।
आई संवत्सरी॥३॥

सायं प्रतिक्रमण कर दिल ने बिल्कुल स्वच्छ बनावै रे।
लख चौरासी जीव योनि स्यूं आज खमावै रे।
आई संवत्सरी॥४॥

जैन धर्म रो श्रेष्ठ पर्व ओ संवत्सरी कहावै रे।
ऋषि पंचमी री महिमा जगवासी गावै रे।
आई संवत्सरी॥५॥

तर्ज : होली.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५२

संवत्सरी है पर्व महान्, करना सबको तप जप ध्यान।।ध्रुव।।

संवत्सरी है त्याग प्रधान, ऋषि मुनियों का है यह गान।
करो आज सब अपना भान॥१॥

एक साल से आती है, शुभ संदेशा लाती है।
अन्दर अरि का हो अवसान॥२॥

क्षमा धर्म को अपनाओ, क्रोध मान को विसराओ।
महक उठे जीवन उद्यान॥३॥

अहित किसी का तुम न करो, निश्छल मन बन ध्यान धरो।
होगा निश्चित ही कल्याण॥४॥

तप जप तो है अन्तर स्नान, यही 'कमल' मुनि का संगान।
मल मल कर न्हाओ मतिमान॥५॥

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५३

आज संवत्सरी आई।
बच्चे-बच्चे के मानस में, अभिनव खुशियां छाई।।ध्रुव।।

इन्तजार के बाद ये आई संवत्सरी की बेला।
तेरापंथ भवन में सुन्दर लगा है मानो मेला।
कदिये-भदिये लोगों की भी सोयी शक्ति जगाई॥१॥

भाद्रमास में धूमधाम से पर्व मनाया जाता।
यह नवान्हिक कार्यक्रम हर आत्मार्थी को भाता।
इस अवसर पर चिहुं दिशि तप की सुषमा छाई॥२॥

तप-जप आत्मालोचन करके जो भी इसे मनाते।
कदम-कदम पर देखो प्रतिपल आगे बढ़ते जाते।
जैन धर्म का महापर्व यह याद रखें सब भाई॥३॥

कर उपवास, तपस्या, पौषध उत्सव खूब मनाएं।
सायं प्रतिक्रमण कर सब जीवों से सभी खमायें।
वैर विरोध मिटाएं सबसे, शुभ संदेशा लाई॥४॥

इसी तरह हम ठाठ-बाट से सालोंसाल मनायें।
महिला मंडल की महिलायें मंगल गीत सुनायें।
सबके रोम-रोम में सचमुच आई है तरुणाई॥५॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५४

सब स्यूं खमावां, आनन्द पावां, मैत्री दिवस मनावां।
कर-कर खमतखामणा आज दिन हो,
आज दिन हो, आज दिन।।ध्रुव।।

वैर विरोध मिटाकर करल्यो दिल ने सारा साफ।
अपणी गल्ती झट स्वीकारो पर ने करद्यो माफ।
बिछुड़े दिल ने गले लगाकर मैत्री भाव बढ़ावां॥१॥

पड्या-पड्या बरतन भी भिड़ज्या मिनखां री के बात।
खमतखामणा करणै वालो बणज्या पृथ्वीनाथ।
पूर्वजन्म री बातां विसर्‌या ज्यूं त्रुटियां विसरावां॥२॥

लख चौरासी जीवा योनि स्यूं अब तो शीघ्र खमाय।
सब स्यूं मैत्री भाव बढ़ावां दिल ने सरल बणाय।
मैत्री दिवस री ढाल बणाकर सबने आज सुणावां॥३॥

तर्ज : चम्पक मुनिवर चांद ज्यूं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५५

सबसे खमायें, आनन्द पायें, दिल को सरल बनायें।
आया क्षमापर्व यह, आज दिन हो, आज दिन हो आज दिन।।ध्रुव।।

औरों की भूलों को भूलें, करके हृदय उदार।
अपनी गलती को स्वीकारें, दिल से बारम्बार।
मैत्री बढ़ायें, मोद मनायें, मिलजुल मंगल गायें॥१॥

पूज्यवरों से क्षमायाचना करके मिलजुल आज।
साधु साध्वियों से भी खमायें बना हृदय निर्व्याज।
समण समणियों से भी खमायें बना हृदय निर्व्याज।
परिकर और पड़ोसी लोगों से भी खमायें आज।
गुणी गुण गायें जागृति लायें, अन्तर ओज बढ़ायें॥२॥

क्षमायाचना करने वाला बनता पृथ्वीनाथ।
जो ना करता क्षमायाचना समकित की हो घात।
हृदय बिठायें ना बिसरायें, जीवन सफल बनायें॥३॥

करबद्ध होकर आज खमाऊं करने मन को साफ।
जो भी कोई ठेस लगी हो कर देना सब माफ।
जागृति लायें सुयश बढ़ायें, बिछुड़े दिल को गले लगायें॥४॥

तर्ज : चम्पक मुनिवर चांद स्यूं हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५६

संवत्सरी पर्व मनाओ, सब हिलमिल मंगल गावो।
समता का स्रोत बहाओ।।ध्रुव।।

है यह पर्व बड़ा ही आला, इसे मनाता किस्मत वाला।
सब अपना भाग्य सराओ।।१।।

वर्ष अनेकों बीते खाते, ऐसे पर्व बहुत कम आते।
अपनी शक्ति अजमाओ।।२।।

तप जप ध्यान सरलता द्वारा घट में होगा दिव्य उजारा।
इसको न तनिक बिसराओ।।३।।

मौसम कितना हुआ सुहाना, पौषध करना मत बिसराना।
अन्तर को स्वच्छ बनाओ।।४।।

जैन धर्म पर हमें गर्व है, जैन धर्म का महापर्व है।
रगड़े झगड़े सलटाओ।।५।।

सायं प्रतिक्रमण करना है, निज कृत पापों को हरना है।
ऐसा अब लक्ष्य बनाओ।।६।।

सबमें प्रगटे हार्दिक भक्ति, स्वयं मिलेगी आत्मिक शक्ति।
इसको निज हृदय बिठाओ।।७।।

सबसे क्षमा-याचना करना, अंतर के कल्मष को हरना।
मुनि कमल अमल बन जाओ।।८।।

तर्ज : तूं मन मन्दिर में आजा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५७

जन्माष्टमी की बेला आई जन-२ में है खुशियां छाई।।ध्रुव।।

जन्मे थे मथुरा नगरी में, खुश रहते मक्खन गगरी में।
माता थी देवकी सुखदाई॥१॥

बचपन से ही थे वे नटखट, मक्खन कर जाते पल में चट।
महितल में महिमा महकाई॥२॥

गायों को स्वयं चराते थे, मुरली की तान सुनाते थे।
है फरक नहीं इसमें राई॥३॥

था मित्र सुदामा सहपाठी, उसकी भी दुःख कारा काटी।
मुरझी बगिया झट सरसाई॥४॥

संयम की खूब दलाली की, पौरूष शिक्षा अर्जुन को दी।
गीता है ग्रंथ अमर भाई॥५॥

भृगु ने जब लात लगाई थी, हरि ने समता दिखलाई थी।
जन आस्था जोत जली भाई॥६॥

इस चौबीसी में तीर्थंकर, श्री कृष्ण बनेंगे गुण सागर।
यह बात वीर प्रभु ने गाई॥७॥

गुणिजन के गुण हम गाएंगे, गा गा कर मौज मनाएंगे।
कण-कण में छाई अरुणाई॥८॥

यादव कुल में अवतार लिया, जीवन में अति उपकार किया।
(नेमि प्रभु युग में जन्म लिया, तीर्थंकर गोत्र भी प्राप्त किया)
मुनि कमल बजी यश सहनाई॥९॥

तर्ज : ओम् पार्श्व प्रभु का ध्यान धरो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५८

आया यह पावन त्योंहार,
आया दीवाली त्योंहार।
महावीर निर्वाण दिवस है, जन-जन हर्ष अपार।।
आया.....।।ध्रुव।।

मां त्रिशला के नंदन प्यारे,
जन-जन की आंखों के तारे।
भर यौवन में बने संयमी, तजकर विषय विकार॥१॥

करके प्रभु ने घोर तपस्या,
स्वयं मिटाई सकल समस्या।
सहन किये हैं अनगिन संकट मन में समता धार॥२॥

पावा में था पावस ठाया,
दो दिन तक उपदेश सुनाया।
सुनकर प्रभु की दिव्य देशना पुलकित सब नर नार॥३॥

महावीर जब मोक्ष सिधाए,
गौतम फिर केवली बन पाए।
एक रात में दो-दो उत्सव, घर-घर मंगलाचार॥
अमावस्या की अर्धरात्रि में पहुंचे मुक्ति द्वार॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घर-घर घी के दीप जलाये,
रत्न देवता ने बरसाए।
सघन अंधेरे में प्रकाश का रहा न कोई पार॥५॥

तब से वर्षों वर्ष दिवाली,
जनता मना रही मतवाली।
उत्सव की असली गरिमा के ज्ञाता हैं दो चार॥६॥

अज्ञानी नर छोड़ पटाखे,
जुए में भी दाव लगा के॥
पी शराब निज भूल भान, करते तन धन बेकार॥७॥

घर-घर में पकवान बनाते,
नये-नये कपड़े सिलवाते।
मौज मस्ती में लगा हुआ है यह भौतिक संसार॥८॥

तप-जप करके इसे मनाएं,
पौषध प्रतिक्रमण भी ठायें।
वैर विरोध मिटाकर सीखें, सबसे करना प्यार॥
अहमदगढ़ में स्तवन बना, गाता मुनि कमल कुमार॥९॥

तर्ज : कितना बदल गया इन्सान.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५९

आई दिवाली-३ ।।ध्रुव ।।

दिवाली दिन नयो कहलावै,
घर-घर में सब माल बणावै,
कपड़ा नया-नया सिलवावै॥१॥

दिवाली मोटो त्योंहार,
इणनै माने सब नर-नार,
सगलां रे मन हर्ष अपार॥२।

दिवाली दिन बण्यो महान्,
हुयो वीर को परिनिर्वाण,
गौतम पायो केवलज्ञान॥३॥

सगलां ने मिल करणो जाप,
हरणो भव-भव को संताप।
धोणो प्रतिक्रमण कर पाप॥४॥

घट-घट प्रज्ञा दीप जलावो,
अंधकार ने दूर भगावो,
मानव जीवन सफल बनावो॥५॥

दिवाली पर म्हाने नाज।
दिवाली आई है आज।
आनन्दित है सकल समाज॥६॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्दर को मल दूर भगावो।
सगला वैर विरोध मिटाओ।
हिल मिल सारा मंगल गावो॥७॥

मन वच काया सरल बणावो।
झड़ी जाप री आज लगावो।
तेला करके भेंट चढ़ावो॥८॥

समझो दिवाली रो सार।
थांने केवे कमल कुमार।
होसी पग-पग जय-जय कार॥९॥

तर्ज : धरती धोरां री.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६०

रक्षा बन्धन का त्योंहार भाई
बहन का बढ़े परस्पर निर्मल प्यार उदार।
रक्षा बन्धन का त्योंहार।।ध्रुव।।

भगिनी कहती बंधव प्यारे तुम मेरी आंखों के तारे।
विपद् काल में करना बंधव आ मेरी संभाल॥१॥

अक्षत कुमकुम राखी कर में लाती भगिनी बंधव घर में।
गुड़ मिश्री या मीठा लाती मन में हर्ष अपार॥२॥

तिलक लगा चावल चिपकाती, शुभ शक्ति उज्ज्वलता चाहती।
करती मुंह मीठा बंधव का कितने विमल विचार॥३॥

कच्चे धागे का कर बंधन करती भाई का अभिनन्दन।
प्रेम भरे अभिनंदन को करता बंधव स्वीकार॥४॥

पर्व हिन्दु संस्कृति का सुन्दर सावन पूनम के दिन घर-घर।
सभी मनाते हैं प्रायः मिल-जुलकर हृदय उदार॥५॥

घर-घर में पकवान बनाते, हर्षोल्लास सहित सब खाते।
रक्षा बन्धन की महिमा गाता मुनि कमल कुमार॥६॥

तर्ज : कितना बदल गया संसार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६१

आई होली रे-२ सद्गुण मोत्यां सूं भरल्यो झोली रे।
कई लोग तो रंग-चंग में पूरी तरह स्यूं लाग्या रे।
गींदड़ देखण खड़ा होण ने मिले न जाग्यां रे।।ध्रुव।।

भांग शराब जुए में पड़कर अपणो समय गमावे रे।
खुद भी दुखी दुखी घर का ना देख्या जावे रे॥१॥

टाबरिया पिचकार्यां भर-भर काफी धूम मचावे रे।
रंग गुलाल छिड़क-छिड़क कर मौज मनावे रे॥२॥

गंदा-गंदा बोल बोल कर पूरी हंसी उड़ावे रे।
अज्ञानी दुर्लभ नर भव ने व्यर्थ गमावे रे॥३॥

समझदार नर अपना अवगुण चुन-चुन सकल निकाले रे।
होली मंगलावे ज्यूं अपना अवगुण बाले रे॥४॥

कई करे उपवास और पौषध अठ पोरी ठावे रे।
सायं प्रतिक्रमण कर सब स्यूं आज खमावे रे।
चौमासी पक्खी रो प्रतिक्रमण कर हावे रे॥५॥

क्षमा मौन सामायिक री मिल जुल पचरंग्यां ठांवां रे।
संत कमल होली रो आछो लाभ कमावां रे॥६॥

तर्ज : .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६२

धर्म सहना सिखाता है।
हर स्थिति में अपने में वह रहना सिखाता है।
धर्म सहना सिखाता है।।ध्रुव।।

धर्म हमारा परम सहायक शास्त्र शास्त्र में गाया।
धर्म बिना हो जाता है मिनटों में सकल सफाया।
सुखमय जीवन जीने की यह कला सिखाता है॥१॥

जो प्रमाद करते हैं इसमें भारी कष्ट उठाते।
सोलह आना सत्य बात है क्यों इसको बिसराते।
पल-पल जागृत रहने वाला शिव सुख पाता है॥२॥

धर्म हीन के विद्या, कुल, बल, गुण सारे ढक जाते।
आदर मान नहीं मिलता, मिलने वाले भय खाते।
घर वालों का मन भी तो नित उठ भय खाता है॥३॥

जैसे तन में प्राण जरूरी वैसे धर्म जरूरी।
धर्म बिना जीवन यात्रा भी रहती सदा अधूरी।
संत कमल अपने अनुभव की बात बताता है।
धार्मिक नर ही कमल सभी के मन को भाता है॥४॥

तर्ज : धर्म की लौ जलाएं हम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६३

जैन धर्म की जय हो।
छोटे बड़े, पढ़े अनपढ़े सब की एक ही लय हो।।ध्रुव।।

जैन धर्म के हम अनुयायी, जैन धर्म यह प्यारा।
भले दिगम्बर या श्वेताम्बर सब का एक हो नारा।
ढंढेरे पंजेरे तेरापंथी अमल हृदय हो॥१॥ जय....

तीर्थंकर चौबीस सभी के मंगल पाठ वही है।
नमस्कार मंत्र हम सबका मंजिल एक सही है।
रत्नत्रय की करें साधना संचित कर्म विलय हो॥२॥ जय....

संतों के हैं पांच महाव्रत श्रावक के बारह व्रत।
प्रतिक्रमण सामायिक विधिवत् चाहे हो होई मत।
है अखाद्य अपेय वस्तुएं वर्जित निःसंशय हो॥३॥ जय....

है नव तत्व और द्रव्य छह जैन धर्म की भित्ति।
है सापेक्षवाद समन्वय जैनागम की नीति।
भव्यात्मा परमात्मा बनती जब कर्मों का क्षय हो॥४॥ जय....

लक्ष्य एक पर उपासना की विधियां न्यारी न्यारी।
बाहर से हों भिन्न भले पर अन्दर से इकतारी।
सिद्धों के पन्द्रह प्रकार हम समझें बन निर्भय हो॥५॥ जय....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चार गति चौरासी लाख सब जीव योनियां जानों।
मुश्किल से मानव भव पाया सही तत्व पहचानो।
श्रम सम शम पर ध्यान लगाओ जिससे भाग्योदय हो॥
जैन धर्म.....॥६॥

समता धर्म बताया प्रभु ने शीघ्र विषमता त्यागो।
यदि करना कल्याण जगत से तो अब जल्दी जागो।
संत कमल का श्रद्धापूर्वक स्वीकारो अनुनय हो॥
जैन धर्म.....॥७॥

तर्ज : नैतिकता की सुर सरिता में.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६४

करना चाहता हूं मैं भगवान भव से बेड़ा पार जी।
इसीलिए ही आया हूं मैं श्रीचरणों के द्वार जी।।ध्रुव।।

प्रथम कार्य हिंसा से बचना मन में किया विचार जी।
तजूं निरर्थक हिंसा सारी करने आत्मोद्धार जी॥१॥

मृषावाद को छोड़ूं जल्दी किया है मन तैयार जी।
तजूं अनर्गल बातें सारी समझ उन्हें बेकारजी॥२॥

अदत्त वस्तु ना ग्रहण करूंगा यह संकल्प उदार जी।
प्रामाणिकता बनी रहे तब ही जीने का सार जी॥३॥

स्वदारा संतोषी रहना हृदय बना अविकार जी।
पतिव्रता मैं बनी रहूं नित, स्मरण रहे हर बार जी॥४॥

परिग्रह की सीमा करके, सकल मिटाऊं भार जी।
इह भव परभव दोनों में सुख कहता कमलकुमार जी॥५॥

तर्ज : बाजरे री रोटी पोयी.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६५

मत भूलो कर्त्तव्य कभी भी यदि मानवता प्यारी है।
जिस मानव में हो मानवता उसका जग आभारी है।
सुन लो धार्मिकों-२।।ध्रुव।।

मानवता के बिना देख लो बड़ी समस्या होती है।
जलती बहू बेटियां जिन्दा (या) भूखी रोती सोती है।
जगह-जगह हम पढ़ते सुनते कैसी अजब बीमारी है॥१॥

भ्रष्टाचार पवन ज्यों फैला देखो सकल दिशाओं में।
फूल नहीं अब पग-पग कांटे बिछे पड़े हर राहों में।
पढ़े लिखे श्रीमान दुखी लगता ज्यों बड़े भिखारी है॥२॥

जन्म मिला मानव का फिर भी जीवन में दानवता है।
मानवता के बिना कभी क्या कार्य कहीं पर जमता है।
संत कमल मानवता का ही सारा विश्व पुजारी है॥३॥

तर्ज : वंदे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६६

अच्छे बच्चे लगते प्यारे, ज्यों अम्बर में चांद सितारे।
अच्छे बच्चे लगते प्यारे।।ध्रुव।।

जो न बोलते मुख से गंदा, शराब मीट ना छूते अंडा।
खुद समझ सबको समझा रे॥१॥

धूम्रपान ना सेवन करते, पान मसालों से भी डरते।
बनते सबके सदा सहारे॥२॥

समय पूर्व जो पढ़ने आते, क्लास छोड़कर कभी न जाते।
हों अच्छे आदर्श हमारे॥३॥
(नहीं लगाते गन्दे नारे)

मात-पिता गुरु आज्ञा माने, उनकी दृष्टि को पहचाने।
श्रद्धा से उसको स्वीकारे॥४॥

अणुव्रत के नियमों को पाले, पहले अपना होश संभाले।
फिर जन-जन के काम संवारे॥५॥

संत कमल की अनुभव वाणी, सुख इच्छुक सब सुनलें प्राणी॥
अपनी अतुल शक्ति दिखलारे।
होते उनके वारे न्यारे॥६॥

तर्ज : जय-जय धर्म संघ.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६७

एक बूंद का विस्तार यह संसार मान ले।
इसकी है न लम्बी चौड़ी स्थिति कहना मान ले।।ध्रुव।।

जड़ चेतन का खेल है सारा।
क्या तुमने यह बैठ विचारा।
करके गहराई से अनुसंधान अब पहचान ले॥१॥
एक बूंद का.....

कुदरत का है काम निराला।
कहीं ठंड कहीं भीषण ज्वाला।
बन के ज्ञाता द्रष्टा एक-एक पदार्थ छान ले॥२॥
एक बूंद का.....

कर्मों की है अजब कहानी।
विरले लोगों ने पहचानी।
दृश्य जगत है मट्टी का मट्टी होगी ठान ले॥३॥
एक बूंद का.....

वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, क्षणिक है।
कौन किसान है कौन वणिक है?
कमल है अनित्य संसार शिक्षा पक्की जान ले॥४॥
एक बूंद का विस्तार यह संसार मान ले॥

तर्ज : स्वामी भीखणजी रो नाम आठूं याम ध्यावां.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६८

बीड़ी, सिगरेट, हुक्के वालों, सुन लो मेरी बात को।
क्यों खराब करते हो सुंदर दांत, होठ औ हाथ को।
अब तो छोड़ दो-२।।ध्रुव।।

धन की बर्बादी होती है, मुंह से बदबू आती है।
घर में माता-बहनों को भी बिल्कुल नहीं सुहाती है।
समझाओ हे प्यारे भाई, पीने वाले भ्रात को॥१॥

मीठी-मीठी खांसी आती, कपड़े भी जल जाते हैं।
किसी धर्म स्थान में जाकर, शोभा कभी न पाते हैं।
जल्दी जागो और जगाओ बिगड़ी हुई जमात को॥२॥

कैंसर जैसा रोग भयंकर तंबाकू से होता है।
तन धन को खोकर के मानव हाथ मसल कर रोता है।
क्यों लज्जित करते हो मानव अपनी ऊंची जात को॥३॥

गधे भी खाते न जिसे, इसको मानव क्यों खाता है?
सदाचार का पाठ पढ़ो मुनि 'कमल' सदा यों गाता है।
हीरे सा क्यों दिवस गंवाता, चांदी सी क्यों रात को॥४॥

तर्ज : वंदे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६९

चुटकी, रजनीगंधा छोड़ो, छोड़ो पान पराग को।
दांत आंत भी स्वच्छ रहेंगे स्वच्छ रखो दिमाग को।।
युवा साथियो।।ध्रुव।।

पुड़िये की तो बातें छोड़ो, डब्बे डब्बे खाते हैं।
खुद खाते हैं और साथियों को भी खूब खिलाते हैं।
क्यों तुम पाल रहे हो घर में इस दुर्व्यसनी नाग को।
युवा साथियों॥१॥

खेणी जर्दा और मसाले काफी क्षति पहुंचाते हैं।
पीक आदि से वस्त्र स्थान, देखो गन्दे हो जाते हैं।
पान मसाले हित तजते हैं अच्छी रोटी साग को।
युवा साथियो॥२॥

कैंसर जैसा महाभयंकर रोग उन्हें फिर होता है।
अपने सुन्दर तन धन यौवन को नर यूं ही खोता है।
निजघर में मत प्रविष्ट होने दो इस भीषण आग को।
घर में आने से रोको इस सर्वभक्षी आग को॥
युवा साथियो॥३॥

तर्ज : वंदे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७०

अपनी रखना मधुर जबान।
कर्कश वाणी से ही होता जगह-जगह नुकसान।।ध्रुव।।

यतनापूर्वक जो भी बोलता।
वाणी में विष नहीं घोलता।
उस मानव का कदम-कदम पर करते सब सम्मान॥१॥

जो असत्य से है घबराता।
सत्य अप्रिय कहते सकुचाता।
भाषा समिति के विवेक से पाता सबसे मान॥२॥

समिति गुप्ति की करो साधना।
क्यों किंचित फिर हो विराधना।
पिता पुत्र या सास बहू का मिटे सकल घमसान॥३॥

कोयल की वाणी अति प्यारी।
कौवे की बोली है खारी।
कोयल को सम्मान मिले, पर कौवे का अपमान॥४॥

हित मित होती जिसकी भाषा।
उससे सबको होती आशा।
संत कमल की शिक्षा मानो यदि करना कल्याण॥५॥

तर्ज : अपनी शक्ति को पहचान.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७१

पहले तोलो दिल टंटोलो।
फिर ही हृदय पट खोलो।
यदि हो जीना चाहते शान से हो-३।।ध्रुव।।

सोचे बिना बोलने से पग-पग पर नित तकरार।
बिन मतलब ही पड़ जाती है देखो बड़ी दरार।
बात सही है तभी कही है, सत्य तथ्य पहचानो॥
सोचो अपने अन्तर ज्ञान से हो-३॥१॥

अकबर सोच रहा था, मीठे होते हैं पकवान।
अकबर से बोला है बीरबल होती मधुर जबान।
अवसर आया तब दर्शाया, हुरमा का यह मधुर संस्मरण॥
सुन लो देकर ध्यान से हो-३॥२॥

बोले बिना न चलता, हर व्यक्ति का देखो काम।
पर वाणी में रखना भाई, अपनी सुदृढ़ लगाम।
अनुभव वाणी सुनले प्राणी संत कमल भी गाता॥
अपने छोटे से संगान से हो-३॥४॥

तर्ज : चम्पक मुनिवर चांद ज्यूं हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७२

करें समाई करें समाई करें समाई जी।
मानव भव की है यह उत्तम बड़ी कमाई जी।।ध्रुव।।

सामायिक से आने वाले रूक जाते हैं पाप।
और पूर्वकृत किये पाप भी हो जाते हैं साफ।
इसी प्रकार नाना तरह महिमा बतलाई जी॥१॥

सामायिक तो सुबह शाम कब ही कर सकते आप।
इससे मिटता सहजतया ही तन मन का संताप।
एक मुहूर्त्त की अवधि गुरु ने बतलाई जी॥२॥

श्रावक का नवमा व्रत है यह रखना प्रतिपल ध्यान।
सामायिक में मौन जाप कर करें आत्म कल्याण।
दिग् दिगन्त में सामायिक की शोभा छाई जी॥३॥

सामायिक से हुआ पूणिया जग तल में विख्यात।
राजा श्रेणिक दंग हुआ था सुनकर उसकी बात।
धर्म ध्यान होता आत्मा से खर्च न पाई जी॥४॥

समय नाम तो है आत्मा का यह आत्मा की आय।
सोच समझकर करना सीखें सुन इच्छुक नर प्राय।
गीत बनाकर संत कमल ने गरिमा गाई जी॥५॥

तर्ज : क्या कमाया-क्या कमाया.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७३

स्वाध्याय दिवस यह आया है।
जन-जन का मन हर्षाया है।।ध्रुव।।

स्वाध्याय ध्यान जो करता है।
भव-भव संचित अघ हरता है।
यह शास्त्र-शास्त्र में गाया है॥१॥

तन्मयता जिस क्षण आती है।
निर्मलता बढ़ती जाती है।
अनुभव अपना दर्शाया है॥२॥

स्वाध्याय बड़ा ही हितकारी।
मिट जाती है दुविधा सारी।
सत्पुरुषों ने बतलाया है॥३॥

अज्ञानी ज्ञानी बन जाता।
भव सागर का झट तट पाता।
मुनि कमल ने गीत सुनाया है॥४॥

तर्ज : जय बोलो वीर जिनेश्वर की.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७४

अपने मन को तोलो-२।
सोच-समझकर समय देखकर मीठी वाणी बोलो।।ध्रुव।।

वाणी में ही अमृत होता वाणी में विष होता।
वाणी से ही मिले प्रतिष्ठा वाणी से सब खोता।
भूल-चूक करके रसना में हालाहल मत घोलो॥१॥
अपने मन को तोलो.....

मान और अपमान उभय नित वाणी से ही होता।
वाणी शिवपुर की सहनाणी सुनो ध्यान दे श्रोता।
कर लो अपने मन को केन्द्रित इधर-उधर मत डोलो॥२॥
अपने मन को तोलो.....

कटु वाणी से बिना आग यह तन सारा सिक जाता।
मृदु वाणी से मिलने वाला मन इच्छित फल पाता।
कमल हृदय की बात बताता सुनो कर्ण पट खोलो॥३॥
अपने मन को तोलो.....

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७५

जप की महिमा भारी।
जप-तप कर तर गये जगत से भविक भव्य नर नारी।।ध्रुव।।

भूतप्रेत रोगादिक से भी मिलता है छुटकारा।
श्रद्धापूर्वक तप जप कर्ता पाता सिन्धु किनारा।
मंत्र जाप की अद्‌भुत शक्ति सचमुच में ही न्यारी॥१॥
तप की महिमा.....॥

मंत्रों के उच्चारण से सब संत होश में आये।
जय युग बीदासर का यह वृत्तान्त कौन बिसराये?
श्रावक शोभा औ रूपां की जाएं सब बलिहारी॥२॥
तप की महिमा.....॥

अमर कुमार अर्हन्नक पुष्पवती की घटना सुन्दर।
मंत्र जाप से मिली सफलता कदम-कदम पर सत्वर।
सेठ सुदर्शन सती सुभद्रा तरे कई संसारी॥३॥
तप की महिमा.....॥

जाप-जपो तन्मय होकर सब ताप पाप मिट जाये।
जन्म-जन्म के बंधन सारे सहजतया कट जाये।
तन मन चिन्तन एक बने वह जाप कमल सुखकारी॥४॥
तप की महिमा.....॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७६

खाद्य संयम जरूरी है।
बिना खाद्य संयम स्वास्थ्य की हालत बूरी है।
खाद्य संयम जरूरी है।।ध्रुव।।

द्रव्य और पदार्थ उभय का संयम स्वयं बढ़ाएं।
सुस्ती, अजीर्ण, कै, दस्तों से स्वतः मुक्ति फिर पाएं।
संयम सधे बिना आत्मा की मुक्ति दूरी है॥१॥

खाद्याखाद्य विवेक बिना घर-घर में बढ़ी बीमारी।
सूगर ब्लडप्रेशर आदिक का आतंक छाया भारी।
रोग शमन हित संयम तप-जप औषध पूरी है॥२॥

खाते पीते भी ऊनोदरी तप का लाभ उठाएं।
स्वयं समझ करके प्रयोग फिर औरों को समझाएं।
केवल सुन अच्छा बतलाना जी हजूरी है॥३॥

तर्ज : करे महावीर को वंदन.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७७

अणुव्रत है सच्चा धन।
अणुव्रती का बन जाता है पावन तन मन चिन्तन।।ध्रुव।।

महावीर प्रभुवर ने हमको शुभ संदेश सुनाया।
अणुव्रत और महाव्रत का यह उत्तम पथ बतलाया।
दोनों ही हैं धर्म मार्ग यह सुन श्रोता प्रमुदित मन॥१॥

महाव्रतों को धारण करके महाव्रती बन जाते।
अणुव्रतों को धारण करके अणुव्रती कहलाते।
संत और श्रावक बनकर के सफल बनायें क्षण-क्षण॥२॥

भवसागर से पार उतारे यह व्रत रूपी नौका।
किस्मत से मानव भव पाया मिला सहज यह मौका।
प्राणों से भी प्यारा समझें जो स्वीकारा हो प्रण॥३॥

सद्गृहस्थ बनना हो तो सब अणुव्रती बन जाओ।
सोच समझ कर श्रावक के व्रत सहजतया अपनाओ।
संत कमल की शिक्षा मानो उज्ज्वल होगा जीवन॥४॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७८

अणुव्रत जीवन का शृंगार।
व्यापारी विद्यार्थी शिक्षक,
सबका सबलाधार।।ध्रुव।।

महावीर की दो धाराएं,
खुद समझें, सबको समझाएं।
अणुव्रत और महाव्रत में बतलाया जीवन सार॥१॥

अणु का मतलब होता छोटा,
धारण कर नर बनता मोटा
सुखमय जीवन हो गृहस्थ का प्रभुवर के सुविचार॥२॥

पांच महाव्रत जो अपनाते,
वे ही जैन संत कहलाते।
भले दिगम्बर या श्वेताम्बर आखिर सब अणगार॥३॥

श्रावक के बारह व्रत होते,
धारण कर्ता सुख से सोते।
तिलभर भी शंका मत करना यदि करना उद्धार॥४॥

पर्युषण की घड़ियां आई,
जन-जन के मन खुशियां छाई।
जगे चेतना अणुव्रत की गाता मुनि कमल कुमार॥५॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७९

प्रतिदिन करें समाई।
मानव भव की है यह उत्तम सबसे बड़ी कमाई।।ध्रुव।।

आने वाले कर्मों से हो जाता है छुटकारा।
कृत कर्मों से भी मिलता है, इससे सहज किनारा।
सामायिक की धर्म शास्त्र में मंगल महिमा गाई॥१॥

श्रावक का नवमा व्रत है यह, इसको कभी न भूलें।
आत्मस्थित बनकर के सारे, आत्म तत्व को छू लें।
यह अमूल्य है नहीं मूल्य से मिल सकती सुन भाई॥२॥

सामायिक से समता का अभ्यास बढ़ायें प्रतिपल।
जिससे तन, मन, चिन्तन, अपने आप बनेंगे निर्मल।
सहजानन्द मिलेगा हर क्षण फर्क नहीं है राई॥३॥

सामायिक संकल्प अनुत्तर जीवन बनता सुन्दर।
गुरु तुलसी महाप्रज्ञ कृपा से फैल रहा है घर-घर।
संत कमल सोयी जन-जन की शक्ति पुनः जगाई॥४॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८०

रे मानव! धन, यौवन का क्यों करता गर्व गुमान रे।
क्या जाने किस पल में इनका हो जाये अवसान रे।।ध्रुव।।

करके कार्य अकार्य निरन्तर, धन का संग्रह करता है।
पर अकार्य करने वाला ही कटु फल इसका वरता है।
इसमें शंका मत करना तूं शास्त्रों का संगान रे॥१॥

यौवन के मद में प्रमत्त हो अकड़-अकड़ कर चलता है।
टिका न टिकता मान किसी का निश्चित इक दिन ढलता है।
सरल और तुम नम्र बनो यदि चाहते निज उत्थान रे॥२॥

सादा जीवन है हितकारी यह अनुभव की बात रे।
जीवन का उत्थान पतन भी है अपने ही हाथ रे।
पर को दोष कभी मत देना संत कमल का गान रे॥३॥

तर्ज : आखिर पिंजरा-पिंजरा ही है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८१

किन्हों थोकड़ो (अठाई-पखवाड़ो) कर हिम्मत थांरा गुणगावां।।
गुण गावां, मिलजुल आज बधांवां।।ध्रुव।।

तपस्या करणी मुश्किल गावै सारो ही संसार।
तपस्या करणे वाले री हो ज्यावै जय-जयकार।
तपस्या करणै वालां री म्हे बलिहारी जावां॥१॥

वर्धमान राखीज्यों तपस्या में परिणाम।
तपसी रा गुण-गान गाकर हर्षित आज तमाम।
दीज्यो म्हांनें भी थे साज इसी भावना भावां॥२॥

गली-गली में तपस्या री लागी रंग रली।
तपस्या रो दृश्य देख खिली कली-कली।
मिल्यो मुश्किल स्यूं ओ मोको पूरो लाभ उठावां॥३॥

मौन ध्यान जाप सामायिक तप रो शृंगार।
मिले है समाधि पूरी गावै 'कमल कुमार'।
गाकर तप संयम गुण-गान म्हांरा कर्म खपावां॥४॥

तर्ज : धन्य राज सुकुमाल मुनि.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८२

पर-गुण गाने बन वाचाल,
जीभ तुम्हारी बन जाएगी मानो मधुर रसाल।।

गुणवानों के जो गुण गाता, वह भी स्वयं गुणी बन जाता।
औरों के गुण गाने वाला रहता है खुशहाल॥१॥

गुण तो सबके ही अपनाओ, जात-पात का भेद मिटाओ।
चाहे जाति से हरिजन, महाजन हो अथवा चांडाल॥२॥

गुणग्राहक गुणवान बनेंगे, वे सच्चे इन्सान बनेंगे।
है यह अनुभव वाणी, इसका रखना प्रतिपल ख्याल॥३॥

संतों की शिक्षा को मानो, सत्य तथ्य को झट पहचानो।
बन जाओगे सभी 'कमल' से देखो मालो-माल॥४॥

तर्ज : कितना बदल गया संसार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८३

अनशन का है अनुपम काम, श्रावक का अंतिम विश्राम।
स्मृति में रखना आप तमाम, यदि पाना हो, शिव सुखधाम ।।ध्रुव ।।

श्रावक के सुमनोरथ तीन, सुन लेना सब हो तल्लीन।
सबसे अंतिम इसका नाम॥१॥

जो करते हैं संथारा, करते अपना निस्तारा।
प्रवर्धमान रहे परिणाम॥२॥

वीरों का यह पथ आला, अपनाता किस्मत वाला।
पाता नर सुख शांति प्रकाम॥३॥

बाह्य जगत से मुंह मोड़ा, आत्मा से नाता जोड़ा।
अमर बनाया, अपना नाम॥४॥

वह दिन होगा धन्य कमल, जिस दिन यह पथ लूंगा चल।
रहती मन में आठो याम॥५॥

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८४

थांरी हिम्मत अनपार, कीन्हो अनशन थे स्वीकार।
थांरी वीरता ने देख-देख नत मस्तक नरनार।।ध्रुव।।

जैन धर्म भैक्षव शासन रो कीन्हो नाम सुनामजी।
संथारे री फैली कीर्ति घर-घर गाम-गामजी।
थे तो अंतरलीन बणग्या करणे भवस्यूं बेड़ो पार॥१॥

चौबिहार संथारे रो थे कीन्हों कीर्तिमानजी।
देख-देख कर थांरी दृढ़ता म्हाने गर्व गुमानजी।
थांरी मजबूती राजपूती आगे मानी मौतहार॥२॥

दौड़ी-दौड़ी आवे जनता लागी जबरी रंगरली।
संथारे रो दृश्य देखकर खिलज्या सबरी कली-कली।
आणे वाला करके जावे श्रद्धासारू कुछ उपहार॥३॥

तर्ज : शासन कल्पतरू.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८५

अनशन की महिमा है भारी, कहते हैं सारे संसारी।
अनशन की.....।। ध्रुव।।

जब आशा तृष्णा मिट जाये, तब ही नर अनशन को ठाये।
नितयाद रखें सब नरनारी॥१॥

अनशन है अमृत का प्याला, पीने वाला किस्मत वाला।
जायें हम उसकी बलिहारी॥२॥

निज पापों का प्रायश्चित्त कर, नर ही कहलाता है हरिहर।
बन जाता उज्ज्वल आचारी॥३॥

बढ़ते चढ़ते परिणाम रहे, प्रतिपल समता का स्रोत बहे।
मुनि कमल मिटे दुविधा सारी॥४॥

तर्ज : ओम पार्श्व प्रभु का ध्यान धरो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८६

थांरी हिम्मत देख अपार, मन में खुशियांरो के पार।
मिलजुल आज खमांवांजी, मंगल गीत सुणांवां जी।।ध्रुव।।

अनशन करणो सचमुच में ही है खाण्डे री धार।
बिना मनोबल तुरंत पलटज्या मन रा सकल विचार।
थांरी देखी अद्भुत क्षमता, अनुपम अपनायी आ समता।
बिरला में ही आ पांवां जी॥१॥

गुणिजन रा गुण गावण मन में बड़ा सचेष्ट।
इसी साधना करणे वाले ने ही मिले यथेष्ट।
है आ अजमायोड़ी बात, चाहे दिन हो चाहे रात।
सबने स्पष्ट बतांवांजी॥२॥

आत्मा भिन्न शरीर भिन्न रो करणो है अभ्यास।
समतामय जीवन रा बणज्या एक-एक अब श्वास।
अपणी उन्नति अपणे हाथ, ऊगे स्वर्णिम नव्य प्रभात।
आ ही प्रतिपल चांवांजी॥३॥

देखां थांरा बढ़ता-चढ़ता दिन-दिन जब परिणाम।
शब्द ने मिले गीत रे खातिर रूं रूं हर्ष प्रकाम।
मन रा सफल हुवे अरमान, हो ज्या भव-भव स्यूं कल्याण।
आ ही भावना भांवां जी॥४॥

तर्ज : गण की आज बधाई लो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८७

करूं मैं अनशन के गुणगान रे, सम्मान रे, रख ध्यान रे।
है सचमुच कार्य महान ।।ध्रुव ।।

अनशन कर सकता नर ज्ञानी, जिसमें होती है मर्दानी।
भव-भव से तरता वह प्राणी बन जाता है अम्लान रे॥१॥
सम्मान रे.....

अनशन की है महिमा न्यारी, समझो ध्यान लगा संसारी।
करता तीव्र मनोबल धारी, कर लेता है कल्याण रे॥२॥
सम्मान रे.....

सबसे वैर विरोध मिटाना, अपनी आत्मा में रम जाना।
तनिक न कष्टों से घबराना, करना नित समरस पान रे॥३॥
सम्मान रे.....

तन चेतन को भिन्न समझना, एक समझकर नहीं उलझना।
यह चिन्तन नित मन में रखना, है कमल भेद विज्ञान रे॥४॥
सम्मान रे.....

तर्ज : धरा पर उतरा स्वर्ग.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८८

थे तो संथारो ठाकर (के) देखो जबरी अलख जगाई।
जबरी अलख जगाई, जनता देख-देख चकराई हो।।ध्रुव।।
थे तो संथारो.........

किडनी और जलोदर वालो रोग नजर नहीं आयो।
वैज्ञानिक युग ने थे तप रो नव परिणाम दिखायो।
दिन-दिन थारे उल्लासजी, नहीं शंका रो अवकाशजी।
जागृति मय ई संथारे री महिमा चहुं दिशि छाई हो॥१॥

भैक्षव शासन है जयवंतो जन-जनरी आ वाणी।
करके अपनी आत्म-साधना तर्‌या है अनगिन प्राणी।
थे कुल पर कलश चढ़ायो जी, जबरो इतिहास बणायोजी।
इसी अलौकिक शक्ति हार्दिक भक्ति स्यूं थे पाई हो॥२॥

थांरी क्षमता अनुपम समता, देखण सारा आवे।
संथारे पर शक्ति सारू सारा भेंट चढ़ावे।
थे बणग्या आत्मालीनजी, ओ बण्यो जोर को सीन जी।
बेटा पोता घरवाला सब हिम्मत खूब दिखाई हो॥३॥

संत कमल थांरा गुण गाकर, पूरो पौरूष पावै।
इण खातर ही सुबह-सुबह नित दर्शन देवण आवै।
अनशन रो दृश्य विराटजी, है बढ़तो चढ़तो ठाठजी।
बेटा, पोता घर वाला सब हिम्मत खूब दिखाई हो।
श्रीमान् स्यूं पोता तक सब हिम्मत खूब दिखाई हो॥४॥

तर्ज : स्वामी जी थांरी साधना.......

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८९

यह तन रोगों की खान, हुआ यह ज्ञान मिले छुटकारा।
इसलिए किया संथारा।
अतः करूं संथारा।
अतः किया संथारा।।ध्रुव।।

नित नए उभरते रोग कई, घटने का कोई काम नहीं।
इनसे होने मुक्त यह पथ स्वीकारा॥१॥

भव-भव में चक्कर है खाया, अब यह उत्तम अवसर आया।
तर जाऊं मैं अब पाऊं सिन्धु किनारा॥२॥

गुरुओं की सुन पावन वाणी, संथारे की पक्की ठाणी।
हो जाए भव-भव से मेरा निस्तारा॥३॥

अपनी आत्मा में लीन रहूं, हर तरह सदास्वाधीन रहूं।
शीघ्र काट दूं यह कर्मों की कारा॥४॥

मैं सबसे आज खमाता हूं, अनिवय की माफी चाहता हूं।
सदा बहे मन में समता की धारा॥५॥

सबका सहयोग मिला भारी, मैं दिल से सबका आभारी।
मुनि कमल आत्म उन्नति है अपने द्वारा॥६॥

तर्ज : जब हम ही छोड़ संसार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९०

जो भी मिला खजाना उसको बांट जाना रे।
क्या जाने कब होगा इस धरा पर आना रे।।ध्रुव।।

बहुत कमाया बहुत ही खाया काफी मौज उड़ाई।
श्रम से कोड़ी-कोड़ी जोड़ी पूंजी खूब बढ़ाई।
मिट्टी के सब खेल खिलौने मत फस जाना रे॥१॥

जितने दृश्य पदार्थ हैं जग में मिट्टी में मिल जाते।
बिना सुगुरु इस गहन तत्त्व का कौन ज्ञान करवाते।
इनके लिए न झगड़ा करके जन्म गंवाना रे॥२॥

पुण्य पाप दो साथ चलेंगे, इसको पक्की मानो।
उन्नति अवनति है निज कर में सत्य तथ्य पहचानो।
सत्संग सेवा का नित पूरा लाभ उठाना रे॥३॥

अपने हाथों देने से ही असली आनंद होता।
छीना झपटी चौरी आगजनी लखकर नर रोता।
संत कमल की शिक्षाओं को मत बिसराना रे॥४॥

तर्ज : नानी तेरी मोरनी को मोर ले गया.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९१

संथारे रा गुणगान मतिमान करै।
देख-देख अरमान, हियो हेम ज्यूं ठरै।
हेम ज्यूं ठरै, दर्शन श्रद्धा स्यूं करै।।ध्रुव।। संथारे रा.....

जिन शासन की विजय पताका खूब फहराई।
कष्टां में अडोल रहकर दृढ़ता दिखलाई।
थांरा पलक-पलक में अनगिन सचमुच कर्म झड़े॥१॥

छोड्यो अन्नपाणी छोड़ रह्या थे शरीर।
बढ़ रह्या आगे स्यूं आगे कष्टांवाने चीर।
थांरी देख-देख क्षमता मन उल्लास भरै॥२॥

इसी तपस्या देखी नहीं कह रह्या गुणी।
वीर रे जमाने चौथे आरे में सुणी।
इसी करणी करणे वालां रा सब काम सरै॥३॥

महाप्रज्ञ गुरुवर बक्साया है दो-दो संदेश।
महाश्रमण महाश्रमणजी री करूणा दृष्टि विशेष।
थांरी वीरता री अमर कहानी कुण विसरै॥४॥

चौविहार गर्मी में सुणकर मनड़ो कम्पावै।
कमल मुनि संथारे रा गुण मुक्त कंठ गावै।
आही भावना विशेष बाई विजय वरै॥५॥

तर्ज : धन्य गज सुकुमाल मुनि.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९२

भूल चूक करके मत करना किंचित कभी बुराई।
करते रहो भलाई।।ध्रुव।।

दुर्लभ मानव जीवन तुमने शुभ कर्मों से पाया।
क्या-क्या कर सद्कार्य निरंतर कितना लाभ उठाया।
रोकड़ सदा मिलाते रहना गफलत मत कर भाई॥१॥

कोई कड़वे शब्द सुनाये तुम्हें न कड़वा कहना।
बनकर प्रतिमा सीखो सब कुछ शांत भाव से सहना।
समता का परिणाम है सुन्दर फरक नहीं है राई॥२॥

बुरा बोलने वाले का क्या जीवन का स्तर बनता।
बुरा बोलने वाले को क्या अच्छी कहती जनता।
छोड़ो बुरा बोलना झटपट सुन शिक्षा सुखदाई॥३॥

उच्चस्तर की वाणी सुनकर सब प्रसन्न हो जाते।
मिलने वाले मुक्त कंठ से झूम-झूम गुण गाते।
संत कमल ने अनुभव वाणी हृदय खोलकर गाई।
संत कमल ने अनुभव वाणी गीत बना बतलाई॥४॥

तर्ज : संयम मय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९३

इस दुनिया में आकर के जिसने ममता त्यागी-२।
सचमुच में है वो ही मानव वो ही है बड़भागी।।
बोला है ना-३ ।। ध्रुव ।।

मांस खाकर पीकर मदिरा जो पागल बन जाते।
ले के हाथ में सिग्रेट को जो धक्के पथ पर खाते।
ये नशा है कैसा समझ न पाया तैसा।
सुख से जीवन अगर बिताना तो इन सबसे बचना॥१॥

निज आत्मा सम समझ सभी को कोयल से स्वर बोलो।
असली दिखाकर नकली न देवो झूठ कभी ना बोलो।
यह है सच्चा धर्म, करो अच्छे कर्म।
सच्चा धार्मिक बनना है तो रिश्वत ठग्गी छोड़ो॥२॥

मानव का क्या धर्म अरे है, इसको समझ न पाते।
मंदिर, मस्जिद, स्थानक, गुरुद्वारे में प्रतिदिन जाते।
तन है तेरा मन्दिर, प्रभु बैठे हैं अन्दर।
मानव धर्म इसे कहते हैं झूठ कपट से बचना॥३॥

तर्ज : तोता मैना.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९४

विनय है सब धर्मों का सार
बिमल विवेक जाग जाता है, पग-पग जय जयकार।।टेक।।

विनयवान को विद्या मिलती सुक्ति-सुक्ति में गाया।
विनयवान अच्छा लगता सबका रहता शिर साया।
मात-पिता गुरु मिलने वाले करते दिले से प्यार॥१॥

सम्प्रदाय हो भिन्न भले ही, सबको विनय सुहाता।
भाषा, वर्ण, वर्ग-लिंग का इसमें फर्क न आता।
विनय बिना सब निरस निठल्ले मन में पक्की धार॥२॥

जहां नम्रता होती देखो ऋद्धि सिद्धियां रहती।
प्रेम मैत्री करुणा आदिक की सरिता छल-हल बहती।
सौ पैसे यह सत्य बात है सुनलो कान पसार॥३॥

है कषाय ही जन्म मरण का, कारण बड़ा कहाता।
विनयवान इस दावानल से, सहजतया बच जाता।
संत कमल की शिक्षा मानो, यदि करना उद्धार॥४॥

तर्ज : धर्म की लौ जगायें हम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९५

हैं हम नन्हें मुन्हें बच्चे कुछ करके दिखलाएंगे।
मात-पिता गुरुवर की शिक्षा दिल से हम अपनाएंगे।।
लक्ष्य एक है-२।।ध्रुव।।

दिखने में हम न्यारे-न्यारे पर दिल के ये अरमान हैं।
हिन्दु, मुस्लिम, जैन सनातन आखिर सब इन्सान हैं।
हैं हम मानव मानवता की बात नहीं बिसराएंगे॥१॥

अणुव्रत का है लक्ष्य यही मानव में सुसंस्कार हो।
वर्ण, जाति औ लिंग, रंग से कहीं नहीं तकरार हो।
मानव अपनी मानवता से जग को सुखी बनाएंगे॥२॥

घृणा भाव को छोड़ हमेशा गुणिजन के गुण गाना है।
गुण ग्राही बन करके सत्वर अणुव्रत को अपनाना है।
मिल जुलकर रहने से सारे कार्य सिद्ध कर पाएंगे॥३॥

तर्ज : वन्दे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९६

संघ की शान बढ़ायें हम
धर्मसंघ की उन्नति हित, जी जान लगायें हम।।टेक।।

संघ हमारा नयन सितारा, हम इसके अनुयायी।
सजग रहें गण की रक्षा हित, रहे न लापरवाही।
जन्म-जन्म से सोयी अपनी, शक्ति जगाये हम॥१॥

हम सुधरेगें जग सुधरेगा, इसको हृदय बिठाये।
आत्म साधना करें करायें, पल-पल मौज मनायें।
सुख दुख की कर्ता निज आत्मा निर्भय गाये हम॥२॥

ईर्ष्या द्वेष मिटायें दिल से, मन को सरल बनाये।
भव-भव की मैली चादर को धोने शक्ति लगायें।
यह मानव भव बड़ा कीमती, ना विसरायें हम॥३॥

भावी और अतीत उभय की चिन्ता को हम छोड़े।
वर्तमान हो उज्ज्वल इस चिन्तन में निज को जोड़े।
सुस्थित होकर सदा शांति का स्रोत बहायें हम॥४॥

तर्ज : धर्म की लौ जगायें हम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९७

क्यों न देखता भूल स्वयं की यदि करना उत्थान रे।
है अपने ही हाथ स्वयं का पतन और निर्माण रे।।ध्रुव।।
सत्य तथ्य है, बिल्कुल सत्य है।।-२।।ध्रुव।।

छोटी मोटी अपनी भूले जो भी शीघ्र निकालेगा।
निश्चित ही वह मानव सबसे ऊंचा दर्जा पालेगा।
भूलो मत तुम इस शिक्षा को यदि चाहते कल्याण रे॥
है अपने ही हाथ.....॥१॥

जो औरों की भूलें भूले, निज की बात विचारे जी।
बन जाते वे चन्द समय में हर मानव के प्यारे जी।
हित इच्छुक करना न भूलता अपना अनुसंधान रे।
है अपने ही हाथ.....॥२॥

अपनी भूल जान लेने से क्रोध शान्त हो जाता है।
सबसे बढ़ता प्रेम निरन्तर पग-पग आनन्द पाता है।
कमल स्वयं की भूल सुधारो बनना अगर महान् रे॥
है अपने ही हाथ.....॥३॥

तर्ज : वंदे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९८

घर-घर बढ़े परस्पर प्यार
एक दूसरे का भाई करना सीखो सत्कार।
घर-घर बढ़े परस्पर प्यार-२ ।।ध्रुव ।।

केवल अपनी ही ना तानो, अपनी ही सब कुछ ना मानो।
तभी आप कहलाओगे सचमुच में बड़े उदार॥१॥

सत्य तथ्य क्या है पहचानो, हो विनम्र समझो मस्तानों।
तभी आपकी मनोकामना होगी झट साकार॥२॥

आंख लाल कर कभी न बोलो, बोलो तो पहले कुछ तोलो।
वरना होगा बात-बात में देखो तुम तकरार॥३॥

जो जीने की कला जानता, जग उसको भगवान मानता।
है यह अनुभव वाणी भाई सुन लो कान पसार॥४॥

जो आराधे गुरु की दृष्टि, उसके पग-पग अमृत वृष्टि।
तिलभर भी शंका मत रखना कहता कमल कुमार॥५॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९९

मेरा जन्म मरण मिट जाये, ऐसा कोई पंथ मिले।
मेरा सोया मन जग जाये, ऐसा कोई पंथ मिले।।ध्रुव।।

चाहता हूं भव सागर तरना, चाहता अन्तरतम को हरना।
जो आत्मज्ञान करवाये॥१॥

काम क्रोध साथ ना छोड़े, पवन वेग मेरा मन दौड़े।
इनसे पीछा छुड़वाये॥२॥

आत्मदेव को मैं आराधूं, करके तप जप तन मन साधूं।
अन्तर ज्योति जल जाये॥३॥

शान्त करूं अन्तर की ज्वाला, पीकर शान्त सुधारस प्याला।
जीवन पावन बन जाये॥४॥

'कमल' बनूं मैं निर्मल निश्चल, यही भावना भाऊं पल-पल।
जो मुक्ति पुरी पहुंचाये॥५॥

तर्ज : ऐसा कोई सन्त मिले.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१००

क्षमा सत्य संतोष दयादिक हैं ये सुख के मूल।
मानव इन्हें न पल भर भूल।।ध्रुव।।

तस्कर चुरा न सकते इनको,
अफसर जब्त न करते जिनको।
सच्चा सुख मिलता है उनको,
जो इनके अनुकूल॥१॥

जिनको बाढ़ बहा ना सकती,
जिनको अग्नी जला न सकती।
अनुभव गम्य सत्य है इनसे,
होना मत प्रतिकूल॥२॥

अन्तर दिल से जो अपनाते,
वे तो भव सागर तर जाते।
केवल रंग रूप वैभव को,
पाकर के मत फूल॥३॥

इनकी रक्षा में निज रक्षा,
कर लो चाहे सभी परीक्षा।
कमल हृदय की बात बताता,
समझ न इसे फिजूल॥४॥

तर्ज : कितना बदल गया संसार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०१

धर्म की शरण में आना होगा.....
जीवन को शुद्ध बनाना होगा, धर्म की शरण में आना होगा।।ध्रुव।।

जीवन तेरा तेरे कर में, फिर क्यों भटके तूं दर-दर में।
अन्तर को स्वच्छ बनाना होगा, धर्म की शरण में आना होगा।।१।।

जितने भी पाप किये जीवन में, उनका प्रायश्चित्त हो मन में।
तब ही मुक्ति का पाना होगा, धर्म की शरण में आना होगा।।२।।

जीवन ज्योतिर्मय बन जाये, जीने का भी आनन्द आये।
ऐसा ही लक्ष्य बनाना होगा, धर्म की शरण में आना होगा।।३।।

अपने अन्तस्थल में झांको, जीवन की कुछ कीमत आंको।
अवगुण से पिंड छुड़ाना होगा, धर्म की शरण में आना होगा।।४।।

सबसे हिल मिल कर के रहना, संत कमल का सबको कहना।
प्रेम सुधा बरसाना होगा धर्म की शरण में आना होगा।।५।।

तर्ज : धर्म में शरण में आना होगा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०२

करले वास निवास मकान बेगाना है।
इक दिन सब को छोड़ मरघट जाना है।।ध्रुव।।

यह सुन्दर तेरी काया, ज्यों है बादल की छाया।
क्यों पागल बनकर मानव, इस पर है तूं ललचाया॥
कि पर भव जाना है॥१॥

क्यों करता मेरा-मेरा यह स्वार्थ भरा है घेरा।
निष्काम भाव से साथी मुश्किल से विरला तेरा॥
कि ध्यान लगाना है॥२॥

तूं नेक कमाई कर ले, रीती झोली अब भर ले।
तज कर के विकथा जग की, तूं ध्यान स्वयं पर घर ले।
अगर सुख पाना है॥३॥

यह जग सारा है सपना, इसमें कोई ना अपना।
यदि चाहता है सुख शांति, प्रभु को हर रोज सुमरना॥
कमल का गाना है॥४॥

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्त्ता जाली का.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०३

मुरली के गुण सुन लो भाई।
स्वयं कृष्ण ने महिमा गाई।।
मुरली के गुण.....।।ध्रुव।।

बिन बोलाए कभी न बोले
चाहे पीटे चाहे छोले।
फर्क नहीं है इसमें राई।
मुरली के गुण.....॥१॥

बोलाओ तो मीठा बोले
वाणी में विष कभी न घोले।
इसीलिए सब करे बड़ाई
मुरली के गुण.....॥२॥

गांठ नहीं है इसके अन्दर
गुण ये तीसरा बोले नटवर।
इसीलिए ये मुझे सुहाई॥
मुरली के गुण.....॥३॥

जो भी मुरली के गुण धारे,
बन जाते वे सबके प्यारे।
इसमें क्या देखो कठिनाई।
मुरली के गुण.....॥४॥

संत 'कमल' ने देखा जैसा,
भाव भरा कविता में वैसा,
नहीं हाथ की एक लगाई,
मुरली के गुण.....॥५॥

तर्ज : संतों के गुण गाओ भाई.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०४

गुरु दृष्टि पर प्रतिपल निर्भय होकर कदम बढ़ाना।
आगे बढ़ते जाना।।ध्रुव।।

बड़े भाग्य से मानव जीवन जैन धर्म यह पाया।
तेरापंथ और तुलसी महाप्रज्ञ सुगुरु का साया॥
इस दुर्लभ अवसर की कीमत को तुमने पहचाना॥१॥

गुरु दृष्टि में चलने वाला सच्चा आनन्द पाता।
अपना, कुल का, और संघ का गौरव खूब बढ़ाता॥
सोलह आना सत्य बात यह इसे नहीं विसराना॥२॥

सिंह वृत्ति से संयम लेकर सिंह वृत्ति ही रखना।
संयम जीवन का तुम क्षण-२ स्वाद निरन्तर चखना।
यही कामना हृदय भावना जीवन को सरसाना॥३॥

तर्ज : संमयमय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०५

जो अपनी भूल बताये, औरों के गुण गाये रे।
उस महापुरुष की महिमा देखो बढ़ती जाये रे।।
उस सत्पुरुष के चरणों में सबशीश झुकाये रे।।ध्रुव।।

भूलों का पुतला मनुज है, भूल अरे हो जाती।
भूल कबूल करे यदि मानव, बनता सब जग साथी।
कदम-कदम पर सदा सफलता, हर पल पाये रे॥१॥

प्रायश्चित्त करके मानव ही पुरुषोत्तम बन जाते।
दसवेकालिक द्वितीय अध्ययन में महापुरुष फरमाते।
अधम पुरुष प्रायश्चित्त कर उत्तम बन जाये रे॥२॥

आत्मस्नान समस्नान न कोई सर्वज्ञों की वाणी।
आत्मस्नान कर तर गये, जग के भविक सैंकड़ो प्राणी।
संत कमल भी अपनी अनुभव बात बताये रे॥३॥

तर्ज : जो अन्तर दृष्टि लगाये.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०६

असली आनन्द उसी ने पाया है।
जिसने जीवन को शुद्ध बनाया है।
असली आनंद उसी ने पाया है।।ध्रुव।।

शास्त्र खोल-खोल कर देखे-२।
ऋषि मुनियों ने साफ सुनाया है।
असली आनंद उसी ने पाया है॥१॥

कथनी-करनी है भिन्न-२।
वह अन्त समय पछताता है।
असली आनंद उसी ने पाया है॥२॥

तीर्थ घूम-घूम कर देखे-२।
पर अन्दर अंधेरा छाया है।
असली आनंद उसी ने पाया है॥३॥

जिसने जीता है मन-२।
अवतार 'कमल' कहलाया है।
असली आनंद उसी ने पाया है॥४॥

तर्ज : इक झांकी को अजब सजाया है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०७

अपने दूषण शीघ्र निकाल,
बन जाएगा सचमुच में ही फिर तूं मालोमाल।।ध्रुव।।

दूषण से होती बरबादी, मन में रहती नहीं समाधि।
हो जाते हैं देखो भाई, हाल अरे बेहाल॥
अपने दूषण.....॥१॥

दूषण तो छोटा भी खोटा, सभी तरह से टोटा ही टोटा।
दूषण से अपने जीवन को रखना है संभाल।
अपने दूषण.....॥२॥

दूषण बिना बुलाये आते, फिर ती वो जाना नहीं चाहते।
अच्छे-अच्छे लोगों को भी कर देते कंगाल॥
अपने दूषण.....॥३॥

दूषण से प्रीति ना करना, दृष्टि विषधर ज्यों नित डरना।
संत कमल की शिक्षा मानो होना अगर निहाल॥
अपने दूषण.....॥४॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०८

आज नशे के युग में नशा सिखाता हूं।
नशा ही है सब कुछ पल-पल मैं गाता हूं।।ध्रुव।।

है भक्ति नशा अति सुन्दर,
बनता दिन मान सिकन्दर,
यदि बढ़ा नशा यह घर-घर
फिर क्यों नर भटके दर-दर पाठ पढ़ाता हूं॥१॥
यह नशा है भाई ऐसा,
ना खर्च एक भी पैसा,
बनना चाहता है जैसा,
बन जाता है नर वैसा सही बताता हूं॥२॥
तन-धन इज्जत की वृद्धि,
मिलती मन चाही सिद्धि,
कर देखो सुख इच्छुक नर,
इस धर्म नशे में गृद्धि स्पष्ट सुनाता हूं॥३॥
यह नशा जगत से तारे,
डूबे को पार उतारे,
हो जाते हैं बस उसके,
सचमुच में वारे न्यारे नित सिखलाता हूं॥४॥
हनुमान व चन्दन बाला,
मीरां का काम निराला,
इतिहास हमारा साक्षी
भक्ति का पथ है आला बता न पाता हूं॥५॥
तप जप व नित्य समाई,
का नशा है हित कर भाई,
परिवार, समाज, देश की
होती स्थितियां सुखदाई सच बतलाता हूं॥६॥

तर्ज : रेशमी सलवार कर्ता.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०९

सचमुच गुरु बिन घोर अंधार।
कौन करेगा बिना सुगुरु अब, भव से बेड़ा पार।
कौन करेगा बिना सुगुरु अब, मेरी नैया पार।।ध्रुव।।

जब-जब भी अंधेरा होता,
मानव खाता रहता गोता
गोते शीघ्र मिटाते गुरु दे ज्ञान प्रकाश उदार॥१॥
गुरु होते निर्लोभी त्यागी
गुरु होते निर्मल वैरागी
पांच महाव्रत का पालन करते हैं दृढ़ताधार॥२॥
गुरु होते जीवन निर्माता
गुरु होते हैं भव जल त्राता
करते हैं निष्काम भाव से जन-जन का उपकार॥३॥
गुरु का स्थान है सबसे ऊंचा
चरणों में जग झुके समूचा
ज्ञानी बना शीघ्र अज्ञानी का करते उद्धार॥४॥
गुरु चरणों में मन रम जाता
यम राजा फिर निकट न आता
काम, क्रोध, मद, मोह , लोभ तज बन जाता अविकार॥५॥
गुरु की करुणा यदि हो जाए
अंधा देखे गूंगा गाए
घूम-घूम गुरु महिमा गाता, मुनिवर कमल कुमार॥६॥

तर्ज : निहारा तुझको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११०

थोड़ा अपनी ओर निहारो खुद ही अपना रूप संवारो।।ध्रुव।।

समता का अभ्यास जरूरी भक्ति इसके बिना अधूरी।
शान्त मना अब इसे विचारो॥१॥

जिसने अहंभाव को मारा, याद करे उसको जग सारा।
अपनी कमजोरी स्वीकारो॥२॥

राग-द्वेष उसके ही हैं कम जो रहता हर स्थितियों में सम।
यह सच्चाई इसको धारो॥३॥

जिसके जीवन में है समता, उसकी जागृत होती क्षमता।
संत कमल ना इसे न कारो॥४॥

तर्ज : थोड़ा अपनी ओर निहारो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१११

नित अर्हम्-अर्हम् गाऊं मैं
अर्हम् का ध्यान लगाऊं मैं।
नित अर्हम्-२........॥१॥

सर्वोच्च अर्हता पद पाऊं
प्रतिपल आत्मा में रम जाऊं
तन्मय बन अर्हम् ध्याऊं मैं
नित अर्हम्-२........॥२॥

अर्हम् में शक्ति भरी भारी
करके देखा सब इकतारी
अनुभव की बात बताऊं मैं।
नित अर्हम्-२........॥३॥

अर्हम्-२ जो ध्याता है
निश्च्छल निर्मल बन जाता है
इसको निज हृदय बिठाऊं मैं।
नित अर्हम्-२........॥४॥

तर्ज : संगठन की वीणा बजने दो.......

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११२

करले-२ संगती संतां री नित भाई रे
करले कमाई धर्मध्यान री।।ध्रुव।।

मात, पिता, सुत बन्धव, नारी, जग रा झूठा नाता रे।
कोई न सागे थारे चाल सी॥१॥

क्रोध, लोभ, मद, मोह भोग अे नर ने नरक पुगावे रे।
करले अब चिन्तन आंख्यां खोल के॥२॥

मतलब की मनुहार जगत में पुरसे नित उठ चूरमो।
मतलब बिन पावे कोनी राबड़ी॥३॥

कालजे री कोरी थारी सुन्दर वर्णी नार हो।
मतलब पूर्यां बा भी मुंह मोड़ले॥४॥

छोड़ दे दुष्कर्म करना करके जरा विचार रे।
बांध्या कर्मां ने पड़सी भोगणा॥५॥

भर्‌यो-भर्‌यो परिवार आखिर पड़सी सबने छोड़णो।
क्यूं अब कर्मां स्यूं भारी हो रह्यो॥६॥

कर्मां रो भूचाल आयां खावे मानव गोता रे।
पड़ज्या जाकर के नरक निगोद में॥७॥

भक्ति कर निष्काम प्रभु री कर्मां नै थे काटो रे।
जो होवे शिवपुर थांने जावणो॥८॥

तर्ज : तेजा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११३

युग पुरुष वही कहलाता है-२।।ध्रुव।।

जो अप्रमत्त रहता प्रतिपल, बनता उसका नर जन्म सफल।
हो जाते क्षय संचित अधदल, युग पुरुष वही.....॥१॥

निज खामी को समझे खामी, तज खामी बनता जग स्वामी।
होती न कभी भी बदनामी, युग पुरुष वही.....॥२॥

निज निन्दा सुन ना घबराये, निज स्तुति सुनकर ना मुस्काये।
हर स्थिति में समता सरसाये, युग पुरुष वही.....॥३॥

आत्मा से आत्मा को जाने, जो सत्य उसे झट पहचाने।
झूठे आग्रह को ना ताने, युग पुरुष वही.....॥४॥

जो नर आत्मस्थित बन जाता, सच्ची सम्पति को वह पाता।
जग भी उसका गौरव गाता, युग पुरुष वही.....॥४॥

कर्मों की कर्ता है आत्मा, कर्मों की भोक्ता है आत्मा।
आत्मा से बनता परमात्मा, युग पुरुष वही.....॥५॥

तर्ज : सत्पुरुष उसी को कहते हैं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११४

मंगल गांवां हर्ष मनांवां झुक-२ चरणां शीश नमांवां।
सु-गुरु पधार्‌या आपणे हो-३।।ध्रुव।।

सोने रो सूरज ऊग्यो है गुरु दर्शन पा आज।
भला पधार्‌या पुर में म्हारे तारण तिरण जहाज।
संघ-संघ पति री सेवा कर संचित कर्म खपांवां।
आया बालू नन्दन आपणे हो-३॥१॥

भैक्षव शासन है जयवंतो मिल्या आप सा नाथ।
दिग् दिगन्त में फैली गुरुवर गण री सुन्दर ख्यात।
जन उन्नायक, शान्ति प्रदायक, गुरुवर रा गुण गांवां।
आया बालू नन्दन आपणे हो-३॥२॥

महाप्रज्ञ महाश्रमण महाश्रमणी पर पूरो नाज।
भैक्षव शासन री उन्नति लख पुलकित सकल समाज।
विजयी शासन रो अनुशासन देख-देख चकरांवां।
आया बालू नन्दन आपणे हो-३॥३॥

महर करावो म्हां भक्तां पर शासन रा सर मोड़।
सेवा रो अवसर बक्सावो अर्ज करां कर जोड़।
सुगुरु दृष्टि ही अमृत वृष्टि हार्दिक विनय सुणांवां।
आया बालू नन्दन आपणे हो-३॥४॥

तर्ज : चम्पक मुनिवर चांद स्यूं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११५

शक्ति मिलने में, है यह पक्की बात।
शक्ति मिलने में, बात कहूं अवदात।।ध्रुव।।

कच्चे धागे जब मिल जाते, हाथी पर भी काबू पाते।
यह जग देखी बात॥१॥

तिनके-तिनके जब मिल जाते, घर का कचरा दूर हटाते।
है यह पक्की बात॥२॥

कंकर पत्थर जब मिल जाते, सुन्दर घर की शोभा पाते।
है अनुभव की बात॥३॥

सीख लिया है मिलना जिसने, सच्चा आनन्द पाया उसने।
शंका की क्या बात॥४॥

सीखो सारे मिलकर रहना, संत 'कमल' का सबको कहना।
स्वर्ग यही साक्षात्॥५॥

तर्ज : तोता उड़ जाना.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११६

जो विषयों से मन हरले, ऐसा कोई सन्त मिले।
जो मन को वश में कर ले, ऐसा कोई संत मिले।।

पत्नी धन नहीं कच्ची कोड़ी, एक प्रीत प्रभुवर से जोड़ी।
'बस' उनकी सेवा कर ले॥१॥

काम क्रोध बनाता अंधा, वातावरण बनाता गन्दा।
जो इन दोनों को तज दे॥२॥

जो नर अपने में रम जाते, वे ही सन्त पुरुष कहलाते।
उनके तूं पांव पकड़ ले॥३॥

समता सहनशीलता लाओ, अपने जीवन को चमकाओ।
निःस्वार्थी भक्ति करले॥४॥

संत 'कमल' तो साफ सुनाता, महाप्रभ गुरु भाग्य विधाता।
बस उनका ध्यान तूं धर ले॥५॥

तर्ज : जो मन को वश में.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११७

नवकार मंत्र का ध्यान धरो।
झट पट भव से कल्याण करो।
अन्तर का अब अज्ञान हरो।।ध्रुव।।

सब मंत्रों में यह आला है।
अमृत का अनुपम प्याला है।
श्रद्धा से इसका पान करो॥१॥

अक्षर पैंतीस सुहाते हैं।
गुण एक सौ आठ कहाते हैं।
पांचों पद का सब ज्ञान करो॥२॥

श्रद्धा से सुमिरन जो करते।
निश्चित भव सागर से तरते।
जप जाप शीघ्र उत्थान करो॥३॥

सुख शांति और मंगल दायक।
फरमाते हैं नित गण नायक।
इसकी सम्यक् पहचान करो॥४॥

प्रति दिन प्रातः उठ जाप करो।
भव-भव के सब संताप हरो।
मुनि कमल शीघ्र निर्वाण वरो॥५॥

तर्ज : ओम शांति जिनेश्वर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११८

स्वागत की बेला में गुरुवर हम शत-शत शीश झुकाते हैं।
करके वन्दन अभिनन्दन हम सब अपना भाग्य सराते हैं॥१॥

यह गंगा घर बैठे आई, इसमें न्हायें मिल जुल भाई।
अन्तर निर्मल करने वाले नर अजरामर पद पाते हैं॥२॥

बदली गुरुवर पुर की काया, मानो कोई स्वर्ग उतर आया।
महामानव की गुण गाथा गा गा, रोम-रोम विकसाते हैं॥३॥

गुरु दृष्टि ही जीवन सृष्टि, गुरु वाणी अमृत की वृष्टि।
किस्मत से तेरापंथ मिला, हम फूले नहीं समाते हैं॥४॥

अर्जी पर मर्जी करवावो, सेवा का अवसर बक्सावो।
हमको आधार आपका है, हम हार्दिक विनय सुनाते हैं॥५॥

तर्ज : महावीर प्रभु के चरणों.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११९

मानवता से ही होती है मानव की पहचान रे।
कौन देखने आता घर में जेवर और मकान रे।।
अब तो जाग रे.....।।ध्रुव।।

धन को संग्रह करने के हित मानवता क्यों खोता है।
राग-द्वेष के बीज अरे क्यों निर्भय होकर बोता है।
देनी होगी प्रभु चरणों में कार्यों की भुगतान रे॥१॥

कितना भी धन संग्रह करले साथ तार ना जाएगा।
यमदूतों के हाथों से फिर कौन छुड़ा कर लाएगा।
जैसी करनी वैसी भरनी ऋषि मुनियों का गान रे॥२॥

देख दुर्दशा जग की अब तूं क्यों ना नींद उड़ाता है।
हीरे से जीवन को क्यों कोड़ी में व्यर्थ गवांता है।
मानवता से ही बढ़ता है मानव का सम्मान रे॥३॥

व्यक्ति की पूजा क्या हो, व्यक्तित्व पुजाया जाता है।
गांधी, नानक, वीर, राम का जीवन हमें बताता है।
है अपने ही हाथ स्वयं का पतन और उत्थान रे॥४॥

यह तेरा यह मेरा कहकर मिथ्या जाल बिछाना है।
चाहे कितने महल बना ले आखिर मरघट जाना है।
क्यों करता मुनि कमल जगत में झूठा गर्व गुमान रे।
चला न चलता कमल जगत में झूठा गर्व गुमान रे॥५॥

तर्ज : वंदे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२०

सन्मार्ग पर जो सदा चले, सत्पुरुष उसी को कहते हैं।
उन्मार्ग को जो छोड़ चले, सत्पुरुष उसी को कहते हैं।।ध्रुव।।

विषियों में आतुर हो प्राणी, करता है अपनी मनमानी।
जो नादानी को छोड़ चले॥१॥

जिसने विषियों को छोड़ दिया, नाता आत्मा से जोड़ लिया।
अपनी आत्मा में रम जाये॥२॥

यह मानव तन प्रभु का मन्दिर, प्रभु बैठे हैं इसके अन्दर।
जो प्रभु सेवा में लीन रहे॥३॥

अपने अवगुण को जो त्यागे, बढ़ जाता वह सबसे आगे।
अपने अवगुण जो दूर करे॥४॥

अन्तर की शुद्धि जो करता, निश्चित भवसागर से तरता।
जो काम क्रोध पर विजय करे॥५॥

जो भीतर बाहर एक सदा, पाता न दुःख वह पुरुष कदा।
वह सन्त कमल सच्चा मानव॥६॥

तर्ज : वह मालिक तेरे अन्दर है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२१

देव मुझे दो ऐसी सन्मति जिससे भव तर जाऊं।
मैं अपने में रम जाऊं।।ध्रुव।।

औरों की चिन्ता को तजकर आत्म ध्यान मैं ध्याऊं।
आत्मा के द्वारा ही प्रभुवर आत्मा में रम जाऊं।
चिन्तन चिन्मय हो नित मेरा यही भावना भाऊं॥१॥

हृदय सरल कर दुष्कृत्यों का प्रायश्चित्त कर पाऊं।
आत्मगुणों का संग्रह करके दुर्गुण को दफनाऊं।
स्फटिक रत्न सम बन कर प्रभुवर प्रभुता को मैं पाऊं॥२॥

वीतराग देवों को वंदन जितने भी हो जग में।
राग-द्वेष को त्याग हमेशा विजय वरूं पग-पग में।
संत कमल की यही भावना भक्ति मगन हो जाऊं॥३॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२२

मानव खुद को शीघ्र सुधार।
बिना सुधारे खुद को भाई पग-पग दुःख अपार।।ध्रुव।।

जब कोई ठोकर लग जाती, तब फिर देखो बुद्धि आती।
बुद्धि से शुद्धि कर अपनी करलो बेड़ा पार॥१॥

अपनी-अपनी बात विचारो, बिगड़ा अपना रूप संवारो।
मिलने वाले सभी करेंगे, दिल से पूरा प्यार॥२॥

पर प्रपंच से दूर ही रहना, संतों का सबको है कहना।
आत्म शांति की चाह अगर तो यह शिक्षा स्वीकार॥३॥

क्यों करता है मेरा-मेरा, जग सारा है रैन बसेरा।
है यह महापुरुषों की वाणी, कहता कमल कुमार॥४॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२३

लक्ष्य बनाएं शक्ति जगाएं पल-पल सफल बनायें।
आया सुंदर अवसर हाथ में हो, हाथ में हो, हाथ में।।ध्रुव।।

चौरासी में चक्कर खाते पाया नर अवतार।
नर ही तो नारायण बनता यह शास्त्रों का सार।
कर अब चिन्तन पल-पल क्षण-क्षण क्यों फिरता घबराया॥१॥

पारस से भी बड़ा कीमती मानव तेरा मोल।
दुर्लभतम अवसर यह पाया अन्तर आंखें खोल।
जो सोता है वह खोता है जगह-जगह बतलाया॥२॥

ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय आदि से अपना रूप निखार।
दुखदाता हैं काम क्रोध उनको सब शीघ्र निकाल।
आत्मा बनता है परमात्मा वीर प्रभू ने गाया॥३॥

छोड़ परायी चुगली निन्दा अपनी बात विचार।
उभय लोक में सुख पाएगा, गाता 'कमल' कुमार।
छोटा सा यह भजन बनाकर सबको आज सुनाया॥४॥

तर्ज : चम्पक मुनिवर चांद स्यूं हो-२.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२४

ओम सत्संग की सरिता में नहाया करो,
गोते गहरे से गहरे लगाया करो।।ध्रुव।।

यदि कर नहीं सकते किसी का भला।
तो बुरा करते भी सरमाया करो॥१॥ ओम.....

यदि अमृत पिलाने की हिम्मत नहीं।
तो हलाहल कभी ना पिलाया करो॥२॥ ओम.....

यदि गुण तुम किसी के गा न सको।
तो अवगुण किसी के न गाया करो॥३॥ ओम.....

गुरुओं की सच्ची वाणी सुनो।
वाणी सुन जीवन में अपनाया करो॥४॥ ओम.....

संत 'कमल' का है कहना यही।
खुद जागो औरों को जगाया करो।
खुद उठो औरों को उठाया करो।
नित आपस में प्रेम बढ़ाया करो॥५॥ ओम.....

तर्ज : घूम-घूम प्रभु गुण गाया करो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२५

मेरा जन्म मरण मिट जाये, ऐसा कोई पंथ मिले।
मेरा सोया मन जग जाये, ऐसा कोई पंथ मिले।।

चाहता हूं भव सागर तरना, चाहता अन्तर तम को हरना।
जो आत्म ज्ञान करवाये, ऐसा कोई.....॥१॥

काम, क्रोध साथ ना छोड़े, पवन वेग मेरा मन दौड़े।
इनसे पीछा छुड़वाये, ऐसा कोई.....॥२॥

आत्म देव को मैं आराधूं, करके तप, जप, मन को साधूं।
अन्तर ज्योति जल जाये, ऐसा कोई.....॥३॥

शान्त करूं अन्तर की ज्वाला, पीकर शान्त सुधारस प्याला।
जीवन पावन बन जाये, ऐसा कोई.....॥४॥

कमल बनूं मैं निर्मल निश्चल, यही भावना भाऊं पल पल।
जो मुक्ति पुरी पहुंचाये, ऐसा कोई.....॥५॥

तर्ज : ऐसा कोई संत मिले.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२६

समझ ले अनेकांत सिद्धान्त-२।
इसकी महिमा बड़ी निराली होते झगड़े शान्त।
समझ ले अनेकान्त सिद्धान्त.....।।ध्रुव।।

महावीर के हम आभारी, जायें बार-बार बलिहारी।
जिनका अनुपमेय यह चिन्तन है सचमुच में कान्त।
समझ ले अनेकान्त सिद्धान्त.....॥१॥

जिसने भी इसको पहचाना, जीने के रहस्य को जाना।
सारी खींचातानी मिटती, होते सकल प्रशान्त।
समझ ले अनेकान्त सिद्धान्त.....॥२॥

क्यों होता है घर-घर झगड़ा शायद इसे न तुमने पकड़ा।
कलह वहीं पर ही होता है, जिधर दृष्टि एकान्त।
समझ ले अनेकान्त सिद्धान्त.....॥३॥

हाथी का दृष्टांत मनोहर, व्यर्थ कलह कर रहे परस्पर।
एक दूसरे को न समझते, होकर के मति भ्रान्त।
समझ ले अनेकान्त सिद्धान्त.....॥४॥

तर्ज : जगाया तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२७

हृदय का परिवर्तन है धर्म-२।
धर्म बिना ना कटे कटेंगे भव-भव संचित कर्म।
हृदय का परिवर्तन है धर्म।
सुखमय जीवन जीने का अब समझें सारे मर्म।
हृदय का परिवर्तन है धर्म।।ध्रुव।।

परिवर्तन करके भोगी नर ही योगी बन पाता।
हिंसक हिंसा त्याग अहिंसक बनकर मौज मनाता।
क्रूर व्यक्ति भी धार्मिक बनता जब बन जाता नर्म॥१॥

अज्ञानी को ज्ञानी बना शीघ्र सत्पथ पर लाना।
उपदेशामृत से पापी को पावन शीघ्र बनाना
शंकाओं का समाधान पा दूर करें सब भर्म॥२॥

सत्य-शील संतोष दयादिक क्रमशः सदा बढ़ायें।
क्षमा, धैर्य, मैत्री आदिक से समता को सरसाये।
बात-बात में कभी न होना भूल चूक कर गर्म॥३॥

तर्ज : धर्म की लौ जगाएं हम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२८

सत्संग प्रेमी सुनो सदस्यों कहना मेरा ध्यान से।
अंडे, मीट, शराब छुड़ाओ सबको मधुर जबान से,
सुन लो भाइयों सुन लो भाइयों।।ध्रुव।।

खान-पान अशुद्ध हुआ तो बुद्धि विकल हो जाएगी।
पग-पग पल-पल पर देखो नित दुविधा बढ़ती जाएगी।
घिर जाता है अच्छा मानव बहुत बड़े नुकसान से॥१॥

केक, पेस्ट्रीयां, आमलेट क्यों अपने घर में लाते हो।
बचपन से बच्चों को गंदा खाना क्यों सिखलाते हो।
गहराई से सोचो सारे जीना हो यदि शान से॥२॥

चीकन, बीयर औ शराब को क्यों अच्छा बतलाते हो।
खुशियों के अवसर पर गंदा क्यों माहौल बनाते हो।
बिगड़ी आदत शीघ्र सुधारो श्रम करके जी जान से॥३॥

यदि समाज का स्तर सुधारना खुद को शीघ्र सुधारोजी।
तट पर नौका डूब रही है इसको पार उतारो जी।
संत कमल भी शिक्षा देता है नूतन संगान से॥४॥

तर्ज : वन्दे मातरम्.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२९

दो घड़ी तूं नाम प्रभू का लिये जा।
अमृत का यह प्याला आकर श्रद्धा से नित पीये जा।।ध्रुव।।

नाम प्रभु का सद्गति दाता इसको दिल में धार ले।
मानव जीवन मिला कीमती इसको शीघ्र सुधार ले।
छोड़ सकल चिंतायें सुख से जीये जा॥१॥

है अनमोल बड़ा यह प्याला इसकी महिमा है न्यारी।
इसके सेवन से मिट जाती आधि व्याधि समझ सारी।
खुद पी औरों को यह शिक्षा दीये जा॥२॥

गुरु बिन कौन करायेगा इस जग में सच्चा ज्ञान जी।
ज्ञान बिना क्या? हो सकता है भव-भव से कल्याणजी।
आत्म ज्ञान कर फटे दिलों को सीये जा॥३॥

तर्ज : आने वाले कल की तुम तकदीर हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३०

सुख शांति के प्यासे सत्संग किया करो।
जब भी अवसर मिले लाभ तुम लिया करो।।ध्रुव।।

सत्संगत करके भोगी, बन जाता असली योगी।
ध्यान तुम दिया करो॥१॥

सत्संगत करके दानव, बन जाता असली मानव।
ज्ञान यह किया करो॥२॥

सत्संग की महिमा भारी समझो सारे नर नारी।
शांत रस पिया करो॥३॥

सत्संग से मिलती शांति, मिट जाती सकल अशांति।
कटे दिल सिया करो॥४॥

तर्ज : मन में जरा विचार बुलबुला पानी का.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३१

सभी के जीवन में है द्वन्द।
ज्ञाता द्रष्टा बनकर भाई पायें परमानन्द।।ध्रुव।।

लाभ अलाभ सुख दुःख औ जन्म मरण का चक्का।
युगों-युगों से चलता आया मान इसे तू पक्का।
समतापूर्वक जीने वाला पाता है आनन्द॥१॥

उदय हुआ जो दिनकर प्रातः अस्तशाम को होता।
रजनी में जो घोर अंधेरा प्रातः किधर है सोता।
इसी तरह सुख-दुख का भाई समझो तुम संबंध॥२॥

ऋतु अनुसार देख लो सर्दी गर्मी खुद ही आती।
बिना बुलाए ही आ जाती बिन भेजे ही जाती।
इसके लिए न करना पड़ता सोचो तनिक प्रबंध॥३॥

साम्य भाव में रहने वाला मन इच्छित फल पाता।
इसे भूल मत एक पलक भी संत कमल यों गाता।
दिग्दिगन्त में सत्कार्यों की फैले सहज सुगंध॥४॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३२

निगुरे मत रहना इन्सान।
सुगुरु बना सद्शिक्षा पाकर कर भव से कल्याण।
निगुरे मत रहना इन्सान।।ध्रुव।।

मात-पिता ने जन्म दिया है बहुत बड़ा उपकार किया है
बिना सुगुरु के कौन करेगा तेरा नव निर्माण॥१॥

गुरु की महिमा जग में भारी जगह-जगह गाते नरनारी।
गुरु बिन घोर अंधेरा जग में सोच समझ मतिमान॥२॥

गुरु ब्रह्मा विष्णु से बढ़कर होते हैं मत-भूल पलक भर।
वेद शास्त्र पुराण सभी में भरा पड़ा यह ज्ञान॥३॥

गुरु की शिक्षा जो अपनाता दुर्लभ जीवन सफल बनाता।
इसमें शंका मत कर भाई संत कमल का गान॥४॥

तर्ज : कितना बदल गया संसार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३३

गुण ग्राहक बन जाओ।
बनकर गुणी गुणी लोगों के गुण को झट अपनाओ।।ध्रुव।।

वर्ण जाति या लिंग रंग की बातों को अब छोड़ो।
जिसमें भी सद्गुण हो उससे नाता अपना जोड़ो।
ईर्ष्या द्वेष क्लेश बढ़ाकर समय न व्यर्थ गमाओ॥१॥

गुण ग्राहक मानव ही अपना जीवन सफल बनाता।
इह भव परभव में देखो वह सबसे आदर पाता।
हंस वृत्ति धारण कर सबसे मैत्री भाव बढ़ाओ॥२॥

कुत्ती के गुण देख कृष्ण ने सुर से आदर पाया।
ईर्ष्यालु ने आंख गंवाकर जीवन व्यर्थ गंवाया।
संत कमल इन घटनाओं को पल भर ना बिसराओ॥३॥

तर्ज : संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३४

जा रहा पल-पल में तेरा यह अरे जीवन।
खो रहा-रहा क्यों कर से भाई यह अरे नरतन।।ध्रुव।।

जो भी तून हित किया वो साथ जायेगा।
जैसा करता उसका फल वैसा ही पायेगा।
समझ ले-२ अब सार तूं तो धर्म ही है धन॥१॥

त्याग-तप संयम नियम कुछ भी तो अपना ले-२।
निज जीवन निज हाथ है अब तो तूं चमकाले-२।
ना भरोसा-२ बीत जाता पल में मानव तन॥२॥

शास्त्र का अब श्रवण करके करो भोग शमन।
प्रभु पद पाना अगर तो करो क्रोध दमन।
मुनि 'कमल' के प्रभु चरण में जाने का है मन॥३॥

तर्ज : मेरा जीवन कोरा कागज.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३५

जय-जय गुरु प्यारे, आये हम तेरे द्वारे।
असर तेरे त्याग का हुआ।
तेरे गुण गाता हूं, गा नहीं पाता हूं।
जो तूने मुझे ज्ञान दिया।।ध्रुव।।

इच्छा रख काम की जो प्रभु को जपते है।
मैं तो कहूं रात दिन वो यूं ही खपते हैं।
निस्वार्थ भक्ति से होंगे पूर्ण अरमान॥१॥

राग-द्वेष में फंसकर जो जीवन गंवाते हैं।
चौरासी में निश्चित वो घोर दुःख पाते हैं।
समता को धारण कर बन जाता नर भगवान॥२॥

ओरों का दमन तो बहुत आसान है
निज का दमन करे वो ही इन्सान है।
अपना दमन करना जग में कठिन महान॥३॥

देव, गुरु, धर्म में जो श्रद्धा रखते हैं।
वे ही नर अजर अमर पद को वरते हैं।
है यह मुनियों का अनुभव विज्ञान॥४॥

तर्ज : जय-जय शिव शंकर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३६

बनामत सन्तों को मेहमान।
संत होते भगवान समान।
जैसा घर में बना हुआ है।
भक्ति से करो प्रदान।।ध्रुव।।

संतों की महिमा है न्यारी, भिक्षा लेते पर न भिखारी।
बड़ी उच्च कोटि की चर्या, किया करो कुछ ज्ञान॥१॥

घर घर से ये भिक्षा लाते, आत्मज्ञान की बात सुनाते।
गांव गांव में घूम-घूम करते स्व-पर कल्याण॥२॥

खा पीकर भी बड़े तपस्वी, डिग्री बिन भी बड़े मनस्वी।
सुख-दुख निन्दा स्तुति समय में करते समरसपान॥३॥

सरस, निरस या रूखा सूखा नहीं देखते चुपड़ा लूखा।
प्रासुक एषणीय भोजन का, रखते प्रतिपल ध्यान॥४॥

आत्म साधना ध्येय संत का, भले संत हो किसी पंथ का।
वर्ण, जाति, या लिंग रंग तो बाहर की पहचान॥५॥

संत अरे होते सतधारी, होते गुरु के आज्ञाकारी।
निर्मलता जिनके कण-कण में, संत कमल का गान॥६॥

तर्ज : निहारा तुमको कितनी बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org